सीआरपीएफ समाचार

राजभाषा विशेषांक

वर्ष 63 | अंक 6 | जुलाई-अगस्त, 2017

कीर्ति चक्र विजेता



शहीद प्रमोद कुमार, कमाण्डेंट





श्री चेतन कुमार चीता, कमाण्डेंट

शौर्य चक्र विजेता



श्री चन्दन कुमार, सहायक कमाण्डेन्ट





सिपाही अमरनाथ मिश्रा



श्री राजीव राय भटनागर, महानिदेशक के.रि.पु.बल, ओलम्पिक पदक विजेता श्री सुशील कुमार, रेसलर को ऊर्जा अंडर–19 फुटबॉल प्रतियोगिता के शुभारंभ के अवसर पर स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए एवं साथ में श्री विजय गोयल, केन्द्रीय युवा एवं खेल राज्य मंत्री तथा अन्य पदाधिकारीगण



ऊर्जा अंडर–19 फुटबॉल प्रतियोगिता के समापन समारोह के अवसर पर श्री अरूण जेटली, माननीय केन्द्रीय वित्त, रक्षा एवं कॉर्पोरेट अफेयर्स मंत्री, श्री किरेण रिजीजू, माननीय गृह राज्य मंत्री एवं महानिदेशक के.रि.पु.बल

मुख्य संरक्षकः–
श्री राजीव राय भटनागर, महानिदेशक

संपादकीय सलाहकार मण्डल

अध्यक्षः
श्री प्रदीप कुमार सिंह, पुलिस महानिरीक्षक (आसूचना)

सदस्यः श्री योज्ञान सिंह, उप महानिरीक्षक (परिचालन–2), श्री एम. धिनाकरण, उप महानिरीक्षक (आसूचना), श्री अरविन्द राय, उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण–2), श्री मनोज वर्मा, द्वितीय कमान अधिकारी(प्रशासन/लेखा)

सीआरपीएफ समाचार एक द्विमासिक पत्रिका है। इसमें प्रकाशित किये जाने वाले विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं। विभाग की नीति से इनका कोई संबंध नहीं है।

– मुख्य संपादक

मुख्य संपादकः
जीतेन्द्र कुमार, द्वि.कमा.अधि.
(जन संपर्क अधिकारी)

संपादक
सत्येन्द्र सिंह (निरीक्षक/हिन्दी अनुवादक)

संपादकीय सहायता :
राम कुमार (स.उ.नि./मं.)

चित्र
जन संपर्क फोटो सेल, महानिदेशालय
और सीआरपीएफ यूनिट्स

संपादकीय कार्यालयः
महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल,
ब्लाक–1, केन्द्रीय कार्यालय परिसर,
लोधी रोड, नई दिल्ली–110003,
दूरभाष : 24360649

महानिदेशक सीआरपीएफ की ओर से मुद्रित और प्रकाशितः
सौनेक्स प्रिन्ट पैक प्रा. लि., ए–10/40,
मेरठ रोड इंण्डस्ट्रीयल एरिया, गाजियाबाद

इस अंक में

1. महानिदेशक का राजभाषा संदेश 02
2. के.रि.पु.बल की 78वीं वर्षगांठ परेड 03
3. पदक अलंकरण समारोह 09
4. के.रि.पु.बल पुनः 57 वीरता पदक से अलंकृत 14
5. केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों ने किया ऊर्जा अडंर–19 फुटबॉल टैलेन्ट हंट टूर्नामेंट–2017 के तृतीय चरण का आयोजन 20
6. स्वच्छ मन एवं स्वच्छ भारत 22
7. राष्ट्रीय एकता में हिंदी भाषा का योगदान 23
8. ''सहायक निदेशक(राजभाषा) की कलम से'' 24
9. जम्मू सेक्टर कार्यालय को राजभाषा प्रथम पुरस्कार 24
10. हिंदी भाषा और अंतर्जाल (इंटरनेट) 25
11. हिंदी की उत्पत्ति 26
12. कविता 27
13. राजभाषा कार्यान्वयन – जिम्मेदारी या अधिकार 28
14. विश्व हिन्दी सम्मेलन 30
15. हमें भारतीय होने पर गर्व होता है 31
16. कविता 32
17. 78वीं वार्षिक परेड में वी.आई.पी. टुकड़ी प्रथम 32
18. महिलाओं से दुर्व्यवहार का दोषी कौन? 33
19. ग्रुप केन्द्र बनतालाब को राजभाषा शील्ड एवं प्रशंसा–पत्र 33
20. राष्ट्रीय एकता में हिंदी का महत्व 34
21. कविता 34
22. महानिदेशक के दौरे 36
23. महानिदेशालय के कार्यक्रम 38
24. विविध कार्यक्रम 40
25. सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल, रोहिणी में वार्षिक प्रदर्शनी एवं पुरस्कार वितरण 41
26. महानिदेशक का डिस्क एवं प्रशंसा–पत्र 42

महानिदेशक का राजभाषा संदेश

14 सितंबर, 2017

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 प्रमुख भारतीय भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। हिंदी इन सभी भाषाओं में प्रमुख भाषा है। यह भारत में अधिकांश लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है। इसी बात को ध्यान में रखकर संविधान निर्माताओं ने काफी विचार–विमर्श के बाद 14 सितम्बंर 1949 को हिंदी भाषा को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

किसी भी देश की भाषा उसकी पहचान होती है। यह हमारी संस्कृति का महत्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग है। हिंदी भाषा हमारी राष्ट्रीय पहचान और एकता की मजबूत कड़ी के रूप में लगातार विशेष भूमिका निभाती आ रही है। यह हमारे विशाल और बहुभाषी राष्ट्र के नागरिकों को एक मंच पर लाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। हिंदी अब बोलचाल और साहित्य की भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि जनसंचार के विविध माध्यमों में इसका प्रयोग बहुतायत बढ़ गया है। अब यह रेडियो, टेलीविजन, समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं, विज्ञापनों, चल–चित्रों जैसे विभिन्न संपर्क माध्यमों से प्रतिष्ठा अर्जित करके बहुत लोकप्रिय हो गई है। देश के लगभग सभी प्रान्तों में जनसाधारण द्वारा इसे आम बोलचाल के लिए अपनाया जाता है।

राजभाषा के रूप में हिंदी के कार्यान्वयन के लिए बनाए गए अधिनियम, नियम तथा संगत आदेशों का अनुपालन करते हुए, हमें अपने काम–काज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने का भरसक प्रयास करना चाहिए। अब कम्प्यूटरों और अन्य उपकरणों की उपलब्धता के फलस्वरूप हिंदी में कार्य करना पहले से और अधिक सरल हो गया है। यह प्रसन्नता की बात है कि सरकारी काम–काज में हिंदी के प्रयोग में धीरे–धीरे प्रगति हो रही है, परन्तु यह प्रगति यथेष्ठ नहीं है। अतः हमें इस ओर आगे बढ़ने के निरन्तर भरसक प्रयास करने हैं। संघ की राजभाषा नीति का मुख्य उद्देश्य राजकीय कार्य मूलरूप से हिंदी में करना है। मूलरूप से कार्यालयीन कार्य हिंदी में किए जाने से ही राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा तथा राजभाषा नीति का सही मायनों में कार्यान्वयन संभव होगा।



विगत में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा हमारे कुछ कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने के लिए निरीक्षण किया गया था। समिति द्वारा इन कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की स्थिति को सराहा गया है। इसके लिए आप सभी सराहना के पात्र हैं। कोई भी भाषा प्रयोग करने से विकसित होती है, उसके आदान–प्रदान से ही बढ़ती है। अतः आपसे आग्रह है कि हिंदी संबंधी आदेशों का पालन करके संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करें। इससे हिंदी का प्रयोग स्वतः बढ़ेगा।

मैं, सभी कार्यालय प्रमुखों से अनुरोध करता हूं कि वे अपने कार्यालयों में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत रूचि लें और स्वयं हिंदी में कार्य करके अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें। संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन है, किंतु संबंधित अनुदेशों का पालन उसी प्रकार दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए, जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन किया जाता है।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से मेरी यह अपील है कि सब मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाएं, जिसमें सब अपना अधिक से अधिक काम–काज हिंदी में करें तथा अपने सभी सहकर्मियों को भी इस दिशा में प्रेरित करें।

शुभकामनाओं सहित।

राजीव भटनागर

(राजीव राय भटनागर) भा.पु.से.
महानिदेशक

केरिपुबल की 78वीं वर्षगांठ परेड



महानिदेशक, के.रि.पु.बल पुलिस स्मारक स्थल पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए

27 जुलाई, 2017 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अपनी 78वीं वर्षगांठ ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु.बल, गुरूग्राम में मनाया। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री राजीव राय भटनागर महानिदेशक, के.रि.पु.बल थे। मुख्य अतिथि ने परेड की सलामी ली और फिर शहीद स्मारक पर माल्यार्पण कर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री अजीत संगवान, कमाण्डेंट 12 बटालियन ने वार्षिक परेड की अगुवाई की, जिसमें सीआरपीएफ बैंड की मधुर धुनों पर मार्च–पास्ट किया।

मुख्य अतिथि श्री राजीव राय भटनागर ने, ग्रुप केन्द्र नोएडा को सर्वोत्तम ग्रुप केन्द्र ट्राफी, सर्वोत्तम कम्प्यूटर सेवी ग्रुप केन्द्र ट्राफी का प्रथम पुरस्कार ग्रुप केन्द्र, श्रीनगर तथा द्वितीय पुरस्कार ग्रुप केन्द्र ग्वालियर को प्रदान किया। 50 बेडेड हॉस्पिटल के लिए कम्पॉजिट हॉस्पिटल, बंगलौर तथा 100 बेडेड हॉस्पिटल के लिए कम्पॉजिट हॉस्पिटल, नई दिल्ली को सर्वोत्तम कम्पॉजिट हॉस्पिटल के लिए सम्मानित किया गया। आर.टी.सी. पेरिंगोम को सर्वोत्तम प्रशिक्षण संस्थान ट्राफी तथा आर.ए.एफ. सेक्टर को सर्वोत्तम इंडुरेंस ट्राफी से नवाजा गया।

श्री अभय, अपर महानिदेशक (प्रशिक्षण) ने मुख्य अतिथि श्री राजीव राय भटनागर, महानिदेशक के.रि.पु.बल को स्मृति चिह्न भेंट किया।



महानिदेशक, के.रि.पु.बल परेड का निरीक्षण करते हुए

परेड की झलकियाँ



महानिदेशक, के.रि.पु.बल वार्षिक परेड की सलामी लेते हुए



महिला सैन्य दल द्वारा सलामी



वी.आई.पी. सुरक्षा सैन्य दल द्वारा सलामी



आर.ए.एफ. सैन्य दल द्वारा सलामी



के.रि.पु.बल सैन्य दल द्वारा सलामी

ट्राफी वितरण



श्री एम.जे. विजय, पु0उ0म0, आर.टी.सी., पेरिंगम महानिदेशक से सर्वोत्तम प्रक्षिण संस्थान की ट्राफी प्राप्त करते हुए



श्री दिनेश कुमार त्रिपाठी, पु0उ0म0, ग्रुप केन्द्र, इलाहाबाद महानिदेशक से सर्वोत्तम सी.पी.सी. ट्राफी प्राप्त करते हुए



डॉ विनय अग्रवाल, महानिरीक्षक(चिकित्सा), कम्पोजिट अस्पताल, नई दिल्ली महानिदेशक से सर्वोत्तम 100 बेडेड अस्पताल की ट्राफी प्राप्त करते हुए



डॉ राज कुमार शर्मा, पु0उ0म0, कम्पोजिट अस्पताल, बंगलौर महानिदेशक से सर्वोत्तम 50 बेडेड अस्पताल की ट्राफी प्राप्त करते हुए



श्री पुखराज जयपाल, पु0उ0म0, ग्रुप केन्द्र, श्रीनगर महानिदेशक से सर्वोत्तम कम्प्यूटर सेवी, ग्रु0के0, प्रथम ट्राफी प्राप्त करते हुए



श्री आर.सी. मीणा, पु0उ0म0, ग्रुप केन्द्र, ग्वालियर महानिदेशक से सर्वोत्तम कम्प्यूटर सेवी, ग्रु0के0, द्वितीय ट्राफी प्राप्त करते हुए



श्री सुनील जून, पु0उ0म0, ग्रुप केन्द्र, नोएडा महानिदेशक से सर्वोत्तम ग्रुप केन्द्र ट्राफी प्राप्त करते हुए

परेड की झलकियाँ



श्री अभय, अपर महानिदेशक (प्रशिक्षण), महानिदेशक के.रि.पु.बल को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए



के.रि.पु.बल महिला बैण्ड द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन

बड़ा खाना



सांस्कृतिक कार्यक्रम





पदक अलंकरण समारोह

78वीं वर्षगांठ की संध्या पर शौर्या संस्थान, के.रि.पु.बल वसंत कुंज, नई दिल्ली मे अलंकरण समारोह का आयोजन किया गया। माननीय गृह राज्य मंत्री श्री हंसराज गंगाराम अहीर, इस समारोह के मुख्य अतिथि थे, उन्होंने इस समारोह मे उपस्थित होकर इसकी शोभा बढाई। उन्होंने के.रि.पु.बल के 62 अधिकारियों एवं जवानों को उनके द्वारा दिखाये गये अद्भूत अनुकरणीय पराक्रम के लिए वीरता के लिए पुलिस पदको से सम्मानित किया।



श्री हंसराज गंगाराम अहीर, माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री राजीव राय भटनागर, महानिदेशक, एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण, कॉमिक बुक ''बहादुर बिरेश'' एवं ''धीर धमेन्द्र'' का अलंकरण समारोह के अवसर पर विमोचन करते हुए

माननीय गृह राज्य मंत्री श्री हंसराज गंगाराम अहीर ने कहा कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए देश के सम्पूर्ण भू–भाग मे तत्पर रहा है। के.रि.पु.बल प्रतिविद्रोहिता, आतंकवाद विरोधी एवं नक्सल विरोधी परिचालन, कानून–व्यवस्था बनाये रखने के अलावा महत्वपूर्ण संस्थानों की सुरक्षा जैसे विभिन्न कर्तव्यों का निर्वहन कर रहा है। उन्होंने कहा कि के.रि.पु.बल देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था की मजबूत नींव है और इसी उत्कृष्टता के लिए इसके जवानों व अधिकारियों को 1586 वीरता के पदकों से सम्मानित किया जा चुका है।

मुख्य अतिथि श्री हंसराज गंगाराम अहीर, माननीय गृह राज्य मंत्री एवं श्री राजीव राय भटनागर महानिदेशक के.रि.पु.बल ने इस अवसर पर के.रि.पु.बल के जाँबाज़ों को समर्पित के.रि.पु.बल के कॉमिक्स श्रृंख्ला वीर गाथाएं ''बहादुर बीरेश'' और ''धीर धर्मेन्द्र'' का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि गृह मत्रांलय जवानो के कल्याण से सम्बन्धित सभी योजनाओं का क्रियान्वयन करने के लिए प्रतिवद्ध है। अंत में उन्होंने के.रि.पु.बल के सभी अधिकारियों एवं जवानों को बधाई दी।

श्री राजीव राय भटनागर, महानिदेशक के.रि.पु.बल ने मुख्य अतिथि का अभिवादन किया और उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किया।



श्री राजीव राय भटनागर, महानिदेशक, के.रि.पु.बल, माननीय गृह राज्य मंत्री श्री हंसराज गंगाराम अहीर को अलंकरण समारोह के अवसर पर स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

श्री हंसराज गंगाराम अहीर, माननीय गृह राज्य मंत्री, अधिकारियों एवं जवानों को पदक प्रदान करते हुए



श्री गुरू चरण कालिन्दा
सहा0 कमा0, 202 कोबरा बटालियन



सिपाही विनोद सिंह, 210 कोबरा बटालियन



श्री संतोष कुमार सिंह,
सहा0 कमा0, 182 बटालियन



सिपाही प्रथा बर्मन, 182 बटालियन



श्री सुरेश कुमार, द्वि0कमा0अधि0,
(अब कमाण्डेंट), 73 बटालियन



सिपाही अरूप बरूआ, 44 बटालियन



सिपाही सौरभ क्षेत्री, 44 बटालियन



सिपाही हेम चन्द्र मेधी, 44 बटालियन



निरीक्षक रूप चन्द्र, 134 बटालियन



सिपाही अनिल कुमार, 134 बटालियन



सिपाही धर्मेन्द्र रॉय, 210 कोबरा बटालियन



सिपाही अरविन्द कुमार चौधरी, 153 बटालियन



श्री अजय पाल, सहायक कमाण्डेंट, 22 बटालियन



सिपाही विकास प्रधान, 22 बटालियन



सिपाही पुरण कुमार, 22 बटालियन


सिपाही प्रमोद कुमार सरोज, 22 बटालियन


सिपाही दलवीर सिंह, 22 बटालियन


सिपाही अश्वनी कुमार, 22 बटालियन


सिपाही राजेश कुमार विश्वकर्मा, 193 बटालियन


सिपाही देवराज गुर्जर, 134 बटालियन


उप निरीक्षक सुशील कुमार, 22 बटालियन


सिपाही अजय मनोहर देवदेकर, 22 बटालियन


श्री पवन कुमार, उप कमाण्डेंट, 121 बटालियन


सिपाही राकेश कुमार, 121 बटालियन


श्री अजीत कुमार राम,
सहायक कमाण्डेंट, 207 कोबरा बटालियन


सिपाही एम0 मणि, 207 कोबरा बटालियन


श्री उमेश कुमार,
सहायक कमाण्डेंट, 215 बटालियन


सिपाही अनुराज टी0, 215 बटालियन


श्री निखिलेश,
सहायक कमाण्डेंट, 204 कोबरा बटालियन


सिपाही बिरपाल सिंह तोमर, 204 कोबरा बटालियन


सिपाही मोहर सिंह जादौन, 204 कोबरा बटालियन


सिपाही विरेन्द्र दधोरिया, 204 कोबरा बटालियन


सिपाही सुरेन्द्र कुमार, 80 बटालियन


सिपाही प्रताप सिंह, 94 बटालियन


सिपाही/चालक मोहम्मद आसिफ, 163 बटालियन


श्री कमल किशोर,
सहायक कमाण्डेंट, 168 बटालियन


उप निरीक्षक हंसराज सिंह मीना, 168 बटालियन


सिपाही अनिल कुमार, 168 बटालियन


सिपाही मिथिलेश पाल, 168 बटालियन


उप निरीक्षक पी0के0 सेठी,
डी.आई.जी.(परिचालन) बीजापुर


सिपाही जयन्त तालुकदार,
डी.आई.जी.(परिचालन) बीजापुर


सिपाही सचिन कुमार,
डी.आई.जी.(परिचालन) बीजापुर


सिपाही सत्यम कुमार,
डी.आई.जी.(परिचालन) बीजापुर


सिपाही अदित कुमार, 219 बटालियन


श्री राकेश कुमार मिश्रा,
उप कमाण्डेंट, 133 बटालियन


सिपाही एस0 करूणाकरन, 133 बटालियन


सिपाही मुख्तियार अहमद खान, 133 बटालियन


श्री जी0एस0 भण्डारी,
सहायक कमाण्डेंट, 218 बटालियन


श्री संजय कुमार,
सहायक कमाण्डेंट, 218 बटालियन


सिपाही के0 शशीकान्त, 218 बटालियन


सिपाही धर्मेन्द्र कुमार सिंह, 218 बटालियन


श्री अभिषेक चौधरी,
सहायक कमाण्डेंट, 157 बटालियन


सिपाही शिन्दे मनोज गोरख, 157 बटालियन


सिपाही कोहॉक आदिनाथ गुलाब, 157 बटालियन


सिपाही संजीत सिंह, 157 बटालियन


श्री देवेन्द्र सिंह कसवा,
उप कमाण्डेंट, 203 कोबरा बटालियन


श्री राजेन्द्र प्रसाद रेगर,
सहायक कमाण्डेंट, 209 कोबरा बटालियन


श्री कुमार ब्रजेश,
सहायक कमाण्डेंट, 209 कोबरा बटालियन


श्री अजाद सिंह,
सहायक कमाण्डेंट, 209 कोबरा बटालियन


सिपाही चेलाथुराई मुर्गन, 209 कोबरा बटालियन


सिपाही राजा इम्बा कुमार, 209 कोबरा बटालियन


सिपाही दुला राम, 203 कोबरा बटालियन

के.रि.पु.बल पुनः 57 वीरता पदक से अलंकृत

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को दिनांक 15 अगस्त, 2017 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सभी पुलिस बलों मे सबसे अधिक वीरता के पुलिस पदकों से अलंकृत किया गया है। इस स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर इसे 57 वीरता के पदकों से सम्मानित किया गया है, जिसमें 02 कीर्ति चक्र, 02 शौर्य चक्र तथा 53 वीरता के लिए पुलिस पदक शामिल है। इनमें से 01 कीर्ति चक्र तथा 02 पुलिस पदक मरणोपरांत प्रदान किये गये हैं। देश के सबसे कठिन क्षेत्रों एवं वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में तैनात बल के अधिकारियों एवं कार्मिकों को असाधारण कार्य और अदम्य साहस का प्रदर्शन करने के लिए वीरता पदकों से सुसज्जित किया गया है। 45 अधिकारियों एवं जवानों को वामपंथी उग्रवाद क्षेत्रों एवं 12 को जम्मू–कश्मीर के संवेदनशील क्षेत्रों में तैनाती के दौरान दिखाए गए शौर्य के लिए ये पदक प्रदान किए गए हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल सबसे अधिक पदकों से अलंकृत है, जिसे अब तक 1643 पदकों से सम्मानित किया जा चुका है। इनमें 01 जॉर्ज क्रॉस, 03 किंग्स पी.एम.जी., 01 अशोक चक्र, 03 कीर्ति चक्र, 01 पद्म श्री, 01 वीर चक्र, 16 शौर्य चक्र, 49 पी.पी.एफ. एस.एम.जी., 192 वीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक, 01 युद्ध सेवा पदक, 05 सेना पदक, 04 विशिष्ट सेना पदक, 1256 वीरता के लिए पुलिस पदक, 05 आई.पी.एम.जी., 03 जीवन रक्षा पदक और जान बचाने के लिए 100 प्रधानमंत्री के पुलिस पदक शामिल हैं। वर्ष 1939 में बल के गठन के बाद से अब तक बल के 2097 अधिकारियों एवं जवानों ने राष्ट्र सेवा में अपने प्राण न्यौछावर किए हैं।

15 अगस्त 2017 को स्वंत्रता दिवस के अवसर पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को 06 विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक और 62 सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक प्रदान किये गये हैं।

कीर्ति चक्र







शहीद प्रमोद कुमार, कमाण्डेंट

शहीद कमाण्डेंट प्रमोद कुमार को मरणोपरांत कीर्ति चक्र से सम्मानित किया गया है। वे 49 बटालियन श्रीनगर (जम्मू एवं कश्मीर) का नेतृत्व कर रहे थे। 15 अगस्त, 2016 को नौहटटा में जामिया मस्जिद के पास आतंकी हमला हुआ था। स्वतंत्रता दिवस समारोह के सम्पन्न होने के उपरान्त सूचना मिलते ही श्री प्रमोद कुमार, कमाण्डेन्ट तुरन्त मौके पर पहुँचे तथा एक इमारत में छिपे आतंकवादी को मार गिराने में जवानों की अगुवाई की। इसी दौरान एक आतंकवादी को आमने–सामने की लड़ाई में मार गिराते हुए गम्भीर रूप से जख्मी हो गये, उनकी गर्दन में गोली लगी थी। उन्हें सेना के 92 बेस हॉस्पिटल में ले जाया गया, जहाँ उन्होंने अंतिम सांस ली।

श्री चेतन कुमार चीता, कमाण्डेंट

कीर्ति चक्र से सम्मानित श्री चेतन कुमार चीता कमाण्डेंट 45 बटालियन के.रि.पु.बल का नेतृत्व कर रहे थे। दिनांक 14 फरवरी,2017 को बांदीपुरा के खान मोहल्ला में आंतकियों के आने की जानकारी के बाद के.रि.पु.बल, 13 राष्ट्रीय राईफल एवं जम्मू पुलिस ने एक सर्च ऑपरेशन चलाया। अपनी टीम को लीड कर रहे श्री चेतन चीता को आतंकियों ने एक साथ 30 गोलियां दागी, जिसमें से 9 गोली उनके शरीर मे लगी। इसके बावजूद श्री चेतन चीता ने धैर्य रखते हुए आतंकवादियों पर 16 राउण्ड फायर किये और एक आंतकी को मार गिराया। इस मुठभेड़ मे वे बुरी तरह से जख्मी हो गये तथा इनकी दाई आँख भी क्षतिग्रस्त हो गई।

वीरता के लिए शौर्य चक्र



श्री चन्दन कुमार, सहायक कमाण्डेन्ट





सिपाही अमरनाथ मिश्रा

वीरता के लिए पुलिस पदक

मरणोपरांत



शहीद सिपाही बालेन हरिजन



शहीद सिपाही अजय कुमार



श्री पवन कुमार सिंह, सहायक कमाण्डेन्ट



उप निरीक्षक सोमदेव आर्या



सिपाही हरि सिंह



श्री नीरज कुमार, सहायक कमाण्डेन्ट



निरीक्षक किशोर लाल



सिपाही पवन कुमार



सिपाही नैनी गोपाल मैती



श्री राजीव कुमार चौधरी, कमाण्डेन्ट



श्री नरेश कुमार, सहायक कमाण्डेन्ट



सिपाही पी.के.पाण्डा



सिपाही एस.प्रकाश

वीरता के लिए पुलिस पदक


सिपाही विश्वभान सिंह


सिपाही बजेश बी.


सिपाही दीपू दास


श्री केशव कुमार मिश्रा,
सहायक कमाण्डेन्ट


सिपाही भूमिरेड्डी श्रीनू


सिपाही सुरेन्द्र बुदी


सिपाही गुम्मीदी श्रीनिवास राव


सिपाही सुरजीत कुमार


सिपाही इरफान अली


सिपाही बाबू लाल


श्री सुनील खींची,
सहायक कमाण्डेन्ट


उप निरीक्षक भानू प्रताप सिंह


सिपाही कवि चौधरी


सिपाही ललित कुमार


सिपाही कीनू मुन्द्री


सिपाही रघुनाथ सारेण


श्री अशोक कुमार ,
द्वितीय कमान अधिकारी


उप निरीक्षक श्रवण कुमार


सिपाही कौशल सिंह


सिपाही तपन कुमार बर्मन

वीरता के लिए पुलिस पदक



सिपाही राजीव रंजन



श्री नीरज कुमार उत्तम,
सहायक कमाण्डेन्ट



उप निरीक्षक संदीप



हवलदार पवन कुमार



सिपाही सरोज कुमार माथुर



सिपाही शब्बीर अहमद खान



श्री अखिलेश कुमार चौबे,
सहायक कमाण्डेन्ट



उप निरीक्षक सुरेन्द्र कुमार पटेल



सिपाही दलविन्द्र सिंह



सिपाही प्रवीण कुमार



सिपाही भजु राम यादव



श्री राम किशन,
उप कमाण्डेन्ट



हवलदार ओम प्रकाश



श्री राकेश शर्मा,
सहायक कमाण्डेन्ट



सिपाही गगनदीप सिंह



सिपाही पटेल विशाल रामसिंह



श्री विवेकानन्द सिंह,
उप कमाण्डेन्ट



उप निरीक्षक भवानी सिंह मीणा



उप निरीक्षक
लखन लाल मीणा



सिपाही वी.डी. कमलाकर

विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक



श्री बृघू श्रीनिवासन, भा.पू.से.
पुलिस महानिरीक्षक, राजस्थान सेक्टर



श्री सुनील सिंह
पुलिस महानिरीक्षक, सी.टी.सी. नीमच(म0प्र0)



डॉ प्रताप सिंह
पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रु0के0, पिन्जौर



श्री ब्रजेश प्रताप सिंह
कमाण्डेंट 16 बटालियन



श्री सत्य नारायण सिंह
कमाण्डेंट 187 बटालियन



निरीक्षक/जीडी, दीलिप कुमार राय
66 बटालियन

सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक

क्र.सं.	ईरला/बल सं.	पद	नाम	कार्यालय
1	2672	पुलिस उप महानिरीक्षक	मोहम्मद रफिक हुसैन	सेन्ट्रल जोन मुख्यालय
2	2779	पुलिस उप महानिरीक्षक	डी0 भट्टाचार्य	केन्द्रीय हथियार भण्डार, रामपुर
3	3362	पुलिस उप महानिरीक्षक	सुनित कुमार राय	महानिदेशालय
4	3388	पुलिस उप महानिरीक्षक	राजेन्द्र सिंह रावत	केरल एवं कर्नाटक सेक्टर मुख्यालय
5	3374	पुलिस उप महानिरीक्षक	दिलीप कुमार चौधरी	आर0ए0एफ0 सेक्टर मुख्यालय
6	3564	पुलिस उप महानिरीक्षक	डॉ0 संजय कुमार	पु0उ0म0नि0 श्रीनगर रेन्ज
7	3548	कमाण्डेन्ट	संजय कुमार	ए0टी0सी0 ग्रु0के0 खटखटी
8	3536	कमाण्डेन्ट	राम कुमार	38 बटालियन
9	3616	कमाण्डेन्ट	कुलवीर सिंह देशवाल	198 बटालियन
10	3552	कमाण्डेन्ट	राज कुमार	116 बटालियन
11	3619	कमाण्डेन्ट	अनिल कुमार	20 बटालियन
12	3646	सी0एम0ओ0 (एस0जी0)	डॉ0 प्रदोष रंजन मिश्रा	कम्पोजिट अस्पताल, हैदराबाद
13	4846	कमाण्डेन्ट	बी0सी0 दलबेहरा	120 बटालियन
14	4758	कमाण्डेन्ट	सत्य रंजन बेहरा	36 बटालियन
15	5932	द्वि0कमा0अधि0	रामपाल	115 बटालियन
16	5805	द्वि0कमा0अधि0	गुरचरण सिंह	132 बटालियन
17	5368	द्वि0कमा0अधि0	श्रवण राम	01 बटालियन
18	5846	द्वि0कमा0अधि0	सुनित कुमार	49 बटालियन
19	5615	द्वि0कमा0अधि0	रघुबीर सिंह	43 बटालियन
20	5539	द्वि0कमा0अधि0	रमेश जी. काबडी	58 बटालियन

21	7296	उप कमाण्डेन्ट	अर्जुन सिंह	03 बटालियन
22	6052	उप कमाण्डेन्ट	कृष्ण कुमार दहिया	194 बटालियन
23	9370	सहायक कमाण्डेन्ट	चन्दवीर सिंह	149 बटालियन
24	7994	सहायक कमाण्डेन्ट	सोम दत्त यादव	181 बटालियन
25	800080619	निरीक्षक / जीडी	राम निवास	आर0टी0सी0 लातूर
26	791180483	निरीक्षक / जीडी	पी0 अंबालगन	रेन्ज मुख्यालय हैदराबाद
27	800673504	निरीक्षक / जीडी	सुबे सिंह	23 बटालियन
28	800480109	निरीक्षक / जीडी	रामस्वरूप	आर0टी0सी0 जोधपुर
29	830710155	निरीक्षक / जीडी	जागे राम	44 बटालियन
30	800661479	निरीक्षक / जीडी	अगस्टिन इक्का	रेन्ज रायपुर
31	800673157	निरीक्षक / जीडी	अर्जुन सिंह	137 बटालियन
32	800230095	निरीक्षक / जीडी	मस्तान सिंह	188 बटालियन
33	800210049	निरीक्षक / जीडी	मोहम्मद शमसेर आलम	163 बटालियन
34	801160117	निरीक्षक / जीडी	जफर अब्बास	26 बटालियन
35	800080147	निरीक्षक / जीडी	राजेन्द्र प्रसाद	सी0आई0ए0टी0 सिलचर
36	800676923	निरीक्षक / जीडी	मोहन सिंह	118 बटालियन
37	790400202	निरीक्षक / जीडी	जगदीश प्रसाद	227 बटालियन
38	800676433	निरीक्षक / जीडी	सिकन्दर सिंह	234 बटालियन
39	830757724	निरीक्षक / जीडी	बालमुकुन्द शर्मा	20 बटालियन
40	800689144	निरीक्षक / जीडी	गजेन्द्र सिंह तोमर	सी0टी0सी0 ग्वालियर
41	821220293	निरीक्षक / जीडी	अन्नतलाल यादव	171 बटालियन
42	800030274	निरीक्षक / जीडी	शीश राम खेदर	16 बटालियन
43	810380197	उप निरीक्षक / जीडी	मदन मोहन प्रसाद	149 बटालियन
44	811240773	उप निरीक्षक / जीडी	गिरधारी लाल	151 बटालियन
45	830743802	उप निरीक्षक / जीडी	रविन्द्र सिंह बैस	पश्चिमी सेक्टर
46	830736049	उप निरीक्षक / जीडी	राम चन्द्र त्रिपाठी	सी.आर.पी.एफ. अकादमी
47	800677074	उप निरीक्षक / जीडी	चमन लाल	121 बटालियन
48	810692885	उप निरीक्षक / जीडी	नरेन्द्र कुमार पाण्डेय	197 बटालियन
49	830760492	उप निरीक्षक / जीडी	सिबु ओरंग	169 बटालियन
50	791270785	स0उ0नि0 / जीडी	प्रभु नाथ प्रसाद	98 बटालियन
51	850813757	स0उ0नि0 / जीडी	अजीत कुमार पाल	ग्रुप केन्द्र, जमशेदपुर
52	850765431	हवलदार / जीडी	क्रिस्ट अनुपम कुजुर	94 बटालियन
53	860881286	निरीक्षक / जीडी (महिला)	रूकमणि देवी	104 आर0ए0एफ0
54	790040144	निरीक्षक / आर0ओ0	शशिधरण टी.एम.	4 सिग्नल बटालियन
55	800676638	निरीक्षक / जीडी	देवेन्द्र सिंह राणा	ग्रुप केन्द्र, दिल्ली
56	831170511	सूबेदार मेजर / जीडी	गजेन्द्र प्रसाद सिंह	116 बटालियन
57	830738444	उप निरीक्षक / जीडी	त्रिलोचन जेना	189 बटालियन
58	850750081	उप निरीक्षक / जीडी	कृति राम पोखरियाल	185 बटालियन
59	870640753	स0उ0नि0 / जीडी	एस0 मोहनदास	189 बटालियन
60	871241309	स0उ0नि0 / जीडी	निर्मल दास	136 बटालियन
61	861321952	हवलदार / जीडी	प्रेमा राम	ग्रु0के0–दो अजमेर
62	850330224	हवलदार / जीडी	सुशील कुमार	ग्रु0के0, अगरतल्ला

केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों ने किया ऊर्जा अंडर –19 फुटबॉल टैलेन्ट हंट टूर्नामेंट-2017 के तृतीय चरण का आयोजन

केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों द्वारा दिनांक 12 जुलाई, 2017 को केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के अंडर–19 फुटबॉल टैलेन्ट हंट टूर्नामेंट–2017 के तृतीय चरण का आयोजन किया गया। इस टूर्नामेंट का शुभारम्भ मुख्य अतिथि श्री विजय गोयल, केन्द्रीय युवा



एवं खेल राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने किया तथा इस मौके पर ओलम्पिक एवं कॉमनवेल्थ के पदक विजेता रेसलर श्री सुशील कुमार, श्री राजीव जैन, निदेशक आसूचना ब्यूरो, श्री राजीव राय



भटनागर, महानिदेशक के.रि.पु.बल एवं विभिन्न बलों के महानिदेशक, मीडिया एवं अन्य जानी मानी हस्तियाँ मौजूद थी।

12 जुलाई से शुरू हुई इस प्रतियोगिता के लड़कियों की



टीम का समापन समारोह का आयोजन दिनांक 18 जुलाई, 2017 को किया गया, जिसके मुख्य अतिथि श्री किरेन रिजीजू, गृह राज्य मंत्री थे। लड़कियों की टीम में मणिपुर (असम रायफल) टीम विजेता रही। मुख्य अतिथि ने विजेता टीम को 5 लाख रूपये नकद तथा ट्राफी भेट किया।





19 जुलाई 2017 को केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के अंडर–19 फुटबॉल टैलेन्ट हंट टूर्नामेंट–2017 के तृतीय चरण का समापन हुआ। माननीय केन्द्रीय वित्त, रक्षा एवं कॉर्पोरेट अफेयर्स मंत्री श्री अरूण जेटली, ऊर्जा–केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल अंडर–19 टैलेन्ट हन्ट टूर्नामेंट–2017 के तृतीय चरण के समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे तथा माननीय गृह राज्य मंत्री श्री किरेन रिजीजू, प्रसिद्ध गायक श्री सुखविन्दर सिंह, महान टी.वी. एवं फिल्म कलाकार श्री सुनील ग्रोवर, श्री राजीव जैन, निदेशक आसूचना ब्यूरो, श्री राजीव राय भटनागर, महानिदेशक, के.रि.पु.बल, श्रीमती अर्चना रामसुन्दरम, महानिदेशक, एस.एस.बी एवं विभिन्न बलों के महानिदेशक भी मौजूद थे।

केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के अंडर–19 फुटबॉल टैलेन्ट हंट टूर्नामेंट–2017 के तृतीय चरण का विजेता पंजाब की टीम रही। मुख्य अतिथि ने विजेता टीम को 5 लाख रूपये नकद तथा ट्राफी भेट किया।





श्री राजीव राय भटनागर, महानिदेशक के.रि.पु.बल ने इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट के शुभारम्भ पर अपने सम्बोधन में श्री विजय गोयल, केन्द्रीय युवा एवं खेल राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) धन्यवाद करते हुए कहा कि उन्हें अत्यन्त खुशी है कि जो जिम्मेदारी के.रि.पु.बल को सौंपी गई थी, उसे हमने अपेक्षाओं से बढ़कर निभाया तथा मुख्य अतिथि का समारोह में उपस्थिति के लिए हार्दिक अभिनन्दन किया ।

उन्होंने विश्व विजेता, ओलम्पिक एवं कॉमनवेल्थ के पदक विजेता रेसलर श्री सुशील कुमार को भी उन्होंने धन्यवाद देते हुए कहा कि उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित होकर सभी का उत्साहवर्धन किया है ।

महानिदेशक के.रि.पु.बल ने केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के अंडर–19 फुटबॉल टैलेन्ट हंट टूर्नामेंट–2017 के तृतीय चरण में दिनांक 18 जुलाई, 2017 को लड़कियों की टीम में विजेता रही टीम मणिपुर तथा लड़कों की टीम में विजेता रही पंजाब टीम को बधाई दिया और कहा कि भविष्य में इससे भी अधिक जोश और जुनून के साथ खेलें व सफलता के कदम चूमें।

महानिदेशक के.रि.पु.बल ने इस टूर्नामेंट का सफलतापूर्वक आयोजन कराने के लिए मुख्य अतिथि माननीय केन्द्रीय वित्त, रक्षा एवं कॉर्पोरेट अफेयर्स मंत्री श्री अरूण जेटली का हार्दिक अभिनन्दन किया एवं उन्हें व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालने के लिए तहे दिल से धन्यवाद दिया।

महानिदेशक ने माननीय गृह राज्य मंत्री श्री किरेन रिजीजू का भी तहे दिल से आभार एवं धन्यवाद प्रस्तुत करते हुए कहा कि उन्होंने टूर्नामेंट को अपनी उपस्थिति से नव ऊर्जा प्रवाहित की है। महानिदेशक के.रि.पु.बल समारोह में उपस्थित प्रसिद्ध गायक श्री सुखविन्दर सिंह, महान टी.वी. एवं फिल्म कलाकार श्री सुनील ग्रोवर, को भी धन्यवाद दिया और कहा कि इस अवसर पर उपस्थित होकर उन्होंने सभी का उत्साहवर्धन किया है और श्री सुखविन्दर सिंह द्वारा गाए गए गीत ने पूरे देश में फुटबॉल खेल को एक नई ऊर्जा दी है ।

महानिदेशक ने टूर्नामेंट को सफलतापूर्वक आयोजन कराने के लिए इसके स्पोंसर्स टाटा मोटर्स, ऑबरॉय ग्रुप, ओ.एन.जी.सी., इंडियन ऑयल एवं एयर इंडिया, ऑल इंडिया रेडियो, दूरदर्शन एवं ऑल स्पोर्ट्स ऑथोरिटी तथा प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का भी आभार व्यक्त किया।

अंत में महानिदेशक ने प्रत्येक अर्द्धसैनिक बलों के महानिदेशकों, अधिकारीगणों एवं जवानों का भी हार्दिक अभिनन्दन कर आभार व्यक्त किया, जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्यक्रम को सफल बनाने में दिन–रात मेहनत की।



स्वच्छ मन एवं स्वच्छ भारत

सफाई अभियान की शुरूआत सर्वप्रथम हमारे देश के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा दिनांक 2 अक्तूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली स्थित बाल्मीकि मंदिर से की गई थी। इस महाभियान को यदि हम एक महा यज्ञ की संज्ञा दे तो कुछ गलत नहीं होगा क्योंकि इस यज्ञ में देश के प्रत्येक नागरिक का शामिल होना नितांत आवश्यक है। हमारे अन्तः ह्रदय में यदि देश सेवा करने का जरा भी जज्बा है तो हम देश के



अन्तः ह्रदय में रह कर, स्वच्छ अभियान रूपी महायज्ञ में अपनी आहुति, अपने इर्द गिर्द सफाई कर, अन्य लोगों को जागरूक करते हुए दे सकते है। यदि हम और आप इस महायज्ञ में शामिल नहीं होते तो, ये महायज्ञ अधूरा रह जायेगा और आने वाले पीढियों को जब हम जो स्वच्छ भारत देना चाहते है वो सपना भी सपना बन कर रह जायेगा। आवश्यक नहीं की देश की सेवा अंतिम छौरो पर गोलियां चलाकर ही की जाये आप देश के अन्तः ह्रदय में रहते हुए आस पास सफाई करना, मल–मूत्र का उत्सर्जन उचित स्थान पर करना, गुटका थूकते वक्त उचित स्थान का चयन करना तथा अन्य व्यक्तियों को साफ सफाई के लिए प्रेरित करना, और एकत्रित कूड़े–कचरे के उचित स्थान पर पहुंचाना ताकि उस समुचित कूड़े कचरे से किसानो के लिए सस्ते दामों पर जैविक खाद, गैस बनाने के लिए कूड़े का सही उपयोग हो सके, जिससे हमारे देश की आर्थिक स्थिति मजबूत होने में भी काफी सहायता मिल सकती है।

यदि अमुख कार्य हम मननशीलता, लगनशीलता के साथ करते है तो उपर्युक्त सेवा रूपी आहुति इस महायज्ञ के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के लिए सार्थकता सिद्ध हो सकती है । जनक जैसे राजाओं ने केवल नियत कर्मो को करने से ही सिद्धि प्राप्त की। अतः सामान्य जनो को शिक्षित करने की दृष्टि से हमें कर्म करना चाहिए।



राकेश कुमार
कमाण्डेंट–55 बटा0, के.रि.पु.बल

जैसे वातावरण में हम रहेंगे वैसे ही विचार आना स्वाभाविक है यदि हम स्वच्छ वातावरण में रहेंगे तो स्वच्छ विचार आयेंगे यदि हम मलीनता में रहेंगे तो मलीन विचार आना स्वाभाविकहै। मलीनता के चलते हमे तरह –तरह की बीमारियों का सामना करना पड़ता है जिसके चलते समय का व्यय, धन व्यय, असहनीय पीड़ा, शारीरिक स्वास्थ्य का गिरना, कुटुम्ब व्यक्तियों का परेशान होना आदि अनेक समस्याएं हमारे समक्ष खड़ी होती हैं जिसका मुख्य कारण सफाई न होना ही है।

कहने का तात्पर्य है कि हमें चाहिए कि जैसे हम अपनी सफाई करते है ऐसे ही घर से पहले अपने आस पास व गली मौहल्लो की सफाई करें। यदि ऐसा हुआ तो वो दिन दूर नहीं होगा जब हम अपनी आने वाली पीढियों को एक धरोहर के रूप में शुद्ध वातावरण व स्वच्छ भारत दे जायेंगे।

पोलियो अभियान की मानिंद प्रत्येक नागरिक को जागरूक करने का अभियान चलाये व निम्न स्तर से उच्च स्तर तक स्वच्छ भारत अभियान के तहत पारितोषिक कार्यक्रम चलाये जाये जैसेः– गली से मौहल्ला, मौहल्ले से गांव, गांव से कस्बा और शहर जिससे गली–गली, गांव–गांव, शहर–शहर , प्रतिस्पर्धा की होड़ चले और इस महायज्ञ को पूर्ण करने के साथ–साथ इस यज्ञ की अग्नि को भविष्य में भी प्रज्ज्वलित रखा जा सके।



राष्ट्रीय एकता में हिंदी भाषा का योगदान



जीतेन्द्र कुमार, द्वि0कमा0अधि0,
(जन सम्पर्क अधिकारी)

भाषा मानव समाज की अप्रतिम उपलब्धि है। भाषा भावों, विचारों की अभिव्यक्ति अथवा भावसम्प्रेषण का सर्वसुलभ व सशक्त साधन है। तात्विकरूप से भाषा ध्वनि प्रतीकों की एक व्यवस्था है जिसके माध्यम से मानव समूह विचार–विनिमय करता है। इन्हीं ध्वनि–प्रतीकों या शब्दों के भाव शब्द या भाषा द्वारा ही मानव समाज में प्रचलित होते हैं। काव्यदर्श में भाषा की शब्दात्मक महिमा की ओर संकेत किया गया है। इतम अन्धतमरू कृत्स्नं जायेत भुवन त्रयं। यदि शब्दाहव्यं योतिरासंसारम् न दीप्यते। इसका अभिप्राय है कि यदि शब्दरूपी योति न होती तो यह सम्पूर्ण जगत् अन्धकार में ही रहता अर्थात् अव्यक्त ही रह जाता। वस्तुतः भाषा ही ज्ञान का सर्वसुलभ माध्यम है। इतना ही नहीं, भाषा ही किसी देश की सच्ची पहचान, उस देश की संस्कृति की संवाहिका होती है। किसी भी राष्ट्र की वैचारिक एवं सामाजिक एकता का आधार भी भाषा ही है।

राष्ट्र की अवधारणा में तीन तत्व अत्यन्त महत्वपूर्ण है–भाषा, संस्कृति एवं देश की भौगोलिक परिसीमा अर्थात् मातृभमि। वस्तुतः भाषा ही संस्कृति का आधार है, भाषा एवं संस्कृति उस देश की भूमिका निर्विवादरूप से महत्वपूर्ण है। ऋग्वेद की ऋचा में इडा, सरस्वती मही त्रिस्त्रोदेवीमयो भुवरू की द्वारा भाषा, संस्कृति एवं राष्ट्र के नागरिकों की भावनात्मक एकता एवं सांस्कृतिक चेतना का मूल आधार भाषा है। भाषा में मानव को बाँधने की अपूर्व शक्ति है। संस्कृत साहित्य में भाषा की इस शक्ति के संबंध में कहा गया है कि शब्देष्वाश्रिता शक्तिः विश्वस्यास्य निबंधिनी अर्थात् शब्द शक्ति (भषिक शक्ति) ही संपूर्ण विश्व को बाँधनेवाली है। विचार–विनिमय मानव एकता का सबल सूत्र है। भाषा का मूल आधार भाव सम्प्रेषण है। सम्प्रेषण से ही सभी सामाजिक कार्य–व्यापार निष्पादित किए जाते हैं। विचारों की एकता राष्ट्र के नागरिक की सबसे बड़ी एकता होती है।

हिन्दी को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के तहत राजभाषा का दर्जा दिया गया है। हिन्दी हजार वर्ष से हमारे सांस्कृतिक विरासत एवं साहित्य की भाषा के साथ–साथ जनता की सम्पर्क भाषा के रूप में प्रचलित रही है। संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अन्य अनेक बोलियों को इसने समाहित किया है। यह हमारे संस्कृत भाषा की ज्येष्ठ पुत्री एवं उत्तराधिकारिणी तथा सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही है। धर्म, अध्यात्म, दर्शन तथा साहित्य के क्षेत्र में पहले जो काम संस्कृत भाषा ने किया, वही कार्य आज हिन्दी भाषा कर रही है। आज वेद, उपनिषद्, स्मृतियों, गीता, रामायण, महाभारत की टीकाएं एवं भाष्य हिन्दी में उपलब्ध हैं। ज्ञान का अक्षय एवं अपार कोश जो संस्कृत में था वह आज हिन्दी के भक्तिकाल के कवियों जैसे कि सूर, तुलसी, मीरा, कबीर, रहीम तथा संत समाज ने भारतीय संस्कृति के ज्ञान संपदा को हिन्दी में आपूरित कर दिया। उन्नीसवीं सदी में भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदभाष्य हिन्दी में किए तथा अपना महान ग्रंथ ''सत्यार्थ प्रकाश'' हिन्दी में लिया। इस प्रकार इसकी जड़ें हमारी सांस्कृतिक, दार्शनिक तथा धार्मिक पृष्ठभूमि में गहरी पैठ है। संस्कृत, पालि, प्राकृत अपभ्रंश, शौरसेनी, मागधि, अवधी, ब्रज, अरबी, फारसी, उर्दू की शब्दसम्पदा को समाहित कर यह भाषा समुच्चय बन गई है। हिन्दी का प्रयोग हिन्दू–मुसलमान, सिख, ईसाई सभी करते हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास के अध्ययन से यह बात सिध्द है कि सिध्दों, नाथों, संतों तथा अनेक पंथों के आचार्यों ने इसे अपने ज्ञान, अध्यात्म तथा उपदेश के प्रचार–प्रसार का माध्यम बनाया। अमीर खुसरो, मलिक मुहम्मद, जायसी, रहीम, रसखान आदि सूफी संतों तथा कवियों ने हिन्दी में काव्य रचनाएं कीं। अहिन्दी भाषी प्रान्तों के अनेक मनीषियों ने हिन्दी को अपनाया तथा देश की स्वतंत्रता आन्दोलन में हिन्दी के गीतों एवं नारों ने नवजागरण का मंत्र फूंका। चाहे रामप्रसाद बिस्मिल की सरफरोशी की तमन्ना हो, या श्यामलाल गुप्ता का विजयी विश्व तिरंगा प्यारा का जागरण मंत्र, यह सब हिन्दी के माध्यम से ही जनमानस में प्रचारित किया गया। इसी कारण से संविधान निर्माताओं ने यह अनुभव किया था कि बहुभाषी भारतवर्ष में एकता की भावना को दृढ़ करने की आवश्यकता है जिसके हिन्दी भाषा ही सर्व समर्थ है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व जिन महापुरुषों ने हिन्दी को स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में परिकल्पना की थी उनमें बंगाल के राजा राममोहन राय का नाम आता है। उन्होंने समस्त भारत को एकता के सूत्र में बाँधे रखने के लिए हिन्दी को अनिवार्य बताया था। परवर्ती ब्राह्मो समाज के यशस्वी नेता केशवचन्द्र सेन ने सन् 1885 में अपने लेख में लिखा, भारतीय एकता का उपाय है सारे भारत में एक भाषा का व्यवहार हो। हिन्दी भाषा को अगर भारतवर्ष की एकमात्र भाषा बनाया जाए तो यह कार्य सहज और शीघ्र सम्पन्न हो सकता है। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कलकत्ता कांग्रेस का अध्यक्षीय भाषण हिन्दी में पढ़ते हुए कहा था, हिन्दी प्रचार का उद्देश्य किसी भी प्रान्ती भाषा को हानि न पहुँचाते हुए केवल यह है कि आजकल जो काम अंग्रेजी से किया जाता है, वह आगे चलकर हिन्दी में किया जा सकता है। महर्षि दयानन्द ने अपने वैदिक धर्म के प्रचार का माध्यम हिन्दी को बनाया और उनका मन्तव्य था कि सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान एकता है। जहाँ भाषा, भाव और भावना में ऐक्य आ आए, वहाँ सागर में नदियों की भाँति सारे सुख एक–एक करके प्रवेश करने लगते हैं। हिन्दी के महान साहित्यकार तथा खड़ी बोली हिन्दी के जन्मदाता माने जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा था, निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को सूल। इस प्रकार हम हिन्दी को राष्ट्रीयता का पर्याय मानते हुए कह सकते हैं कि हिन्दी भारत की भारती है, हिन्दी हिन्दुस्तान की हिन्दी है। यह हमारे राष्ट्रीय एकीकरण का मूल सूत्र है। अतरू हमें अपनी संविधान सम्मत सभी भाषाओं का पूर्ण सम्मान करते हुए राष्ट्रीय भावना और एकता को परिपुष्ट करने के लिए राजभाषा हिन्दी को उसके पद पर सही अर्थों में निष्ठापूर्वक स्थापित करने का संकल्प लेना चाहिए।

''सहायक निदेशक(राजभाषा) की कलम से''



महिपाल सिंह रावत
सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारत एक बहुभाषी देश है। यहां विभिन्न संस्कृतियां, अनेक भाषाएं, धर्म, रीति–रिवाज और परम्पराएं हैं जो कि एक साथ फल–फूल रही हैं। इस संदर्भ में यह कहना उपयुक्त होगा कि जिस प्रकार एक गुलदस्ते में अलग–अलग तरह के फूल होते हैं किंतु उन सभी की मिलकर एक छटा होती है, उसी प्रकार भारत की अनेक भाषाएं मिलकर एक ही भारतीय संस्कृति को प्रतिबिम्बित करती हैं। हिंदी इसका बृहत्तर स्वरूप है जो हमारी एकता का प्रतीक है क्योंकि हमारे देश की अधिकांश जनता को अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने के लिए जिस माध्यम का सहारा लेना पड़ता है वह हिंदी ही है। यह अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को ग्रहण करके आत्मसात करने में पूर्णतः सक्षम है। जीवित और विकासशील भाषाओं में शब्दों का आदान–प्रदान होता रहता है। अतः हिंदी भाषा में शब्दों की बहुलता हमारी सांस्कृतिक विविधता और सम्पन्नता का सूचक भी है। संविधान में वर्णित सभी भाषाओं के साथ–साथ इस विशाल बहुभाषी राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने में हिंदी की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। यही कारण है कि हमारे प्रबुद्ध राजनेताओं, विचारकों और मनीषियों ने देश के अधिकांश लोगों द्वारा प्रयोग में लायी जा रही सम्पर्क भाषा हिंदी को काफी सोच–विचार के बाद 14 सितंबर 1949 को सर्वसम्मति से राजभाषा के रूप में स्वीकार करके संवैधानिक दर्जा प्रदान किया और संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 में राजभाषा संबंधी प्रावधानों की व्यवस्था की गई। चूँकि हमारी संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था और तभी से 14 सितंबर को हर वर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हिंदी एक सरल, सहज और सुबोध भाषा है इसीलिए यह जन सम्पर्क की भाषा बनी है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के लिए हिंदी ने ही पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोया था। केन्द्र सरकार को हिंदी के प्रचार–प्रसार का दायित्व सौंपा गया। यह पत्र–पत्रिकाओं, सिनेमा, दूरदर्शन आदि द्वारा घर–घर पहुंच चुकी है। इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया ने हिंदी को जन–जन तक पहुंचाकर इसे जनमानस की भाषा बनाया है। देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाने के लिए हिंदी का व्यावहारिक प्रयोग बहुत जरूरी है। हम अपने दिन–प्रतिदिन के काम में बोझिल भाषा को छोड़कर सरल, सहज और सुबोध भाषा का इस्तेमाल करें ताकि हमारे भावों का परस्पर सहज रूप से आदान–प्रदान हो सके।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार सभी कार्यालयों में रखे जाने वाले रजिस्टरों और सभी वर्गो के अधिकारियों और कर्मचारियों की सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियां हिंदी में ही की जाएं। 'क' और 'ख' क्षेत्रों से भेजे जाने वाले डाक के लिफाफों पर पते अनिवार्य रूप से हिंदी में ही लिखे जाने हैं। कार्यालय में प्रति वर्ष स्थानांतरण पर आने वाले प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अपना शासकीय कार्य हिंदी में करने के लिए राजभाषा नियम नियम 8(4) के अंतर्गत व्यक्तिशः आदेश जारी किए जाने हैं। राजभाषा नियम 1976 के नियम 12 के अनुसार प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान की यह जिम्मेदारी है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963 के प्रावधानों के समुचित अनुपालन के लिए जांच बिन्दु बनाएं और उनका प्रभावशाली ढंग से अनुपालन करें। वस्तुतः हमारे वरिष्ठ अधिकारी स्वयं हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करके अधीनस्थ कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित कर सकते हैं। ऐसा होने पर इसके सार्थक परिणाम स्वतः नजर आने लगेंगे।

अतः आप सभी से अनुरोध है कि हिंदी को मन, वचन और कर्म से अपनाने का संकल्प लें तथा सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करके अपने संवैधानिक दायित्व को पूरा करें। राजभाषा संबंधी संवैधानिक एवं कानूनी प्रावधानों का पालन सुनिश्चित करने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्त करने की दिशा में पूर्ण एवं सार्थक प्रयास करें ताकि राजभाषा हिंदी को संविधान द्वारा प्रदत्त इसका उचित स्थान शीघ्र मिल सके।

जम्मू सेक्टर कार्यालय को राजभाषा प्रथम पुरस्कार

उत्तर क्षेत्र–1 से वर्ष 2015–16 के लिए प्रथम पुरस्कार स्वरूप दिनांक 06 अक्तूबर 2016 को आगरा में आयोजित राजभाषा सम्मेलन/पुरस्कार वितरण समारोह में माननीय गृह राज्य मंत्री श्री किरेन रिजीजू द्वारा जम्मू सेक्टर कार्यालय को राजभाषा शील्ड एवं निरी/हिं0अनु0 राजेन्द्र प्रसाद नौटियाल प्रशस्ति पत्र प्रदान कर अलंकृत किया गया।



हिंदी भाषा और अंतर्जाल (इंटरनेट)

सुना है अब इंटरनेट में लैटिन के साथ ही देवनागरी में भी खोज सुगम होने वाली है। यह एक अच्छी खबर है मगर इससे हिंदी भाषा के पढ़ने और लिखने वालों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ जायेगी, यह आशा करना एकदम गलत होगा। सच तो यह है कि अगर देवनागरी में खोज सुगम हुई भी तो भी इसी मंथर गति से ही हिंदी लेखन और पठन में बढ़ोतरी होगी जैसे अब हो रही है। हिंदी को लेकर जितनी उछलकूद दिखती है उतनी वास्तविकता जमीन पर नहीं है। सच कहें तो कभी–कभी तो लगता है कि हम हिंदी में इसलिये लिख पढ़े रहे हैं क्योंकि अंग्रेजी हमारे समझ में नहीं आती। हम हिंदी में लिखते–पढ़ते इसलिये भी हैं ताकि जैसा लेखक ने लिखा है वैसा ही समझ में आये। वरना तो जिनको थोड़ी बहुत अंग्रेजी आती है उनको तो हिंदी में लिखना दोयम दर्जे का लगता है। वैसे अंतर्जाल पर हम लोगों की अंग्रेजी देखने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि लोगों की अंग्रेजी भी कोई परिपक्व है इस पर विश्वास नहीं करना चाहिए–क्योंकि बात समझ में आ गयी तो फिर कौन उसका व्याकरण देखता है और अगर दूसरे ढंग से भी समझा जाए तो कौन परख सकता है कि उसने वैसा ही पढ़ा जैसा लिखा गया था। बहरहाल अंग्रेजी के प्रति मोह लोगों का इसलिये अधिक नहीं है कि उसमें बहुत कुछ लिखा गया है बल्कि वह दिखाते हैं ताकि लोग उनको पढ़ा–लिखा इंसान समझें।

'आप इतना पढ़े–लिखें हैं फिर भी आपको अंग्रेजी नहीं आती–''हिंदी में पढ़े लिखे एक सज्जन से उनके पहचान वाले लड़के ने कहा''–हमें तो आती है, क्योंकि अंग्रेजी माध्यम से पढ़े हैं न!'

मध्यम वर्ग की यह नयी पीढ़ी हिंदी के प्रति रुझान दिखाने की बजाय उसकी उपेक्षा में आधुनिकता का बोध इस तरह कराती है जैसे कि 'नयी भारतीय सभ्यता' का यह एक प्रतीक हो। इनमें तो कई ऐसे हैं जिनकी हिंदी तो गड़बड़ है साथ ही इंग्लिश भी कोई बहुत अच्छी नहीं है।

जैसे जैसे हिंदी भाषी क्षेत्रों में सरकारी क्षेत्र के विद्यालयों और महाविद्यालयों के प्रति लोगों का रुझान कम हुआ है–निजी क्षेत्र में अंग्रेजी की शिक्षा का प्रसार बढ़ा है। एक दौर था जब सरकारी विद्यालयों में प्रवेश पाना ही एक विजय समझा जाता था–उस समय निजी क्षेत्र के छात्रों को फुरसतिया समझा जाता था। उस समय के दौर के विद्यार्थियों ने हिंदी का अध्ययन अच्छी तरह किया। शायद उनमें से ही अब ऐसे लोग हैं जो हिंदी में लेखन बेहतर ढंग से करते हैं। अब अगर हिंदी अच्छे लिखेंगे तो वही लोग जिनके माता पिता फीस के कारण अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के निजी विद्यालयों में नहीं पढ़ा सकते और सरकारी विद्यालयों में ही जो अपना भविष्य बनाने जाते हैं।

एक समय एक लेखक ने अंग्रेजी के एक प्रसिद्ध स्तंभकार श्री खुशवंत सिंह के इस बयान पर विरोध करते हुए एक अखबार में पत्र तक लिख डाला 'जिसमें उन्होंने कहा था कि हिंदी गरीब भाषा है।'

बाद में पता लगा कि उन्होंने ऐसा नहीं कहा बल्कि उनका आशय था कि 'हिन्दुस्तान में हिंदी गरीबों की भाषा है'। तब अखबार वालों पर भरोसा था इसलिये मानते थे कि उन्होंने ऐसा कहा होगा पर अब जब अपनी आंखों के सामने बयानों की तोड़–मोड़ देख रहे हैं तो मानना पड़ता है कि ऐसा ही हुआ होगा। बहरहाल लेखक उनकी आलोचना के लिये अब क्षमाप्रार्थी है क्योंकि अब यह लगने लगा है कि वाकई हिंदी गरीबों की भाषा है। इन्हीं अल्पधनी परिवारों में ही हिंदी का अब भविष्य निर्भर है इसमें संदेह नहीं और यह आशा करना भी बुरा नहीं कि आगे इसका प्रसार अंतर्जाल पर बढ़ेगा, क्योंकि यही वर्ग हमारे देश में सबसे बड़ा है।



आशुतोष वरदेय,
सहा0कमा0(लाईन), महानिदेशालय

समस्या यह है कि इस समय कितने लोग हैं जो अब तक विलासिता की शय समझे जा रहे अंतर्जाल पर सक्रिय होंगे या उसका खर्च वहन कर सकते हैं। इस समय तो धनी, उच्च मध्यम, सामान्य मध्यम वर्ग तथा निम्न मध्यम वर्ग के लोगों के लिये ही यह एक ऐसी सुविधा है जिसका वह प्रयोग कर रहे हैं और इनमें अधिकतर की नयी पीढ़ी अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित है। जब हम अंतर्जाल की बात करते हैं तो इन्हीं वर्गों में सक्रिय प्रयोक्ताओं से अभी वास्ता पड़ता है और उनके लिये अभी भी अंग्रेजी पढ़ना ही एक 'फैशनेबल' बात है। ऐसे में भले ही सर्च इंजिनों में भले ही देवनागरी करण हो जाये पर लोगों की आदत ऐसे नहीं जायेगी। अभी क्या गूगल हिंदी के लिये कम सुविधा दे रहा है। उसके ईमेल पर भी हिंदी की सुविधा है। ब्लॉग स्पॉट पर हिंदी लिखने की सुविधा का उपयोग करते हुए अनेक लोगों को तीन साल का समय हो गया है। अगर हिंदी में लिखने की इच्छा वाले पूरा समाज होता तो क्या इतने कम ब्लाग लेखक होते? पढ़ने वालों का आंकड़ा भी कोई गुणात्मक वृद्धि नहीं दर्शा रहा।

गूगल के ईमेल पर हिंदी लिखने की सुविधा की चर्चा करने पर एक नवयौवना का जवाब बड़ा अच्छा था–'अंकल हम उसका यूज (उपयोग) नहीं करते, हमारे मोस्टली (अधिकतर) फ्रैंड्स हिंदी नहीं समझते। हिंदी भी उनको इंग्लिश (रोमन लिपि) में लिखना पसंद है। सभी अंग्रेजी माध्यम से पढ़े हैं। जो हिंदी वाले भी हैं वह भी इससे नहीं लिखते।'

ऐसे लोगों को समझाना कठिन है। कहने का तात्पर्य यह है कि हिंदी की कितनी भी सुविधा अंतर्जाल पर आ जाये उसका लाभ तब तक नहीं है जब तक उसे सामान्य समाज की आदत नहीं बनाया जाता। इसका दूसरा मार्ग यह है कि इंटरनेट कनेक्शन सस्ते हो जायें तो अल्प धन वाला वर्ग भी इससे जुड़े जिसके बच्चों को हिंदी माध्यम में शिक्षा मजबूरीवश लेनी पड़ रही है। यकीनन इसी वर्ग के हिंदी भाषा का भविष्य को समृद्ध करेगा। ऐसा नहीं कि उच्च वर्ग में हिंदी प्रेम करने वाले नहीं है–अगर ऐसा होता तो इस समय इतने लिखने वाले नहीं होते–पर उनकी संख्या कम है। ऐसा लिखने वाले निरंकार भाव से लिख रहे हैं पर उनके सामने जो समाज है वह अहंकार भाव से फैशन की राह पर चलकर अपने को श्रेष्ठ समझता है जिसमे हिंदी से मुंह फेरना एक प्रतीक माना जाता है।

हिंदी की उत्पत्ति

प्राकृत भाषाएँ ईसवी सन् के कोई आठ–नौ सौ वर्ष तक और अपभ्रंश भाषाएँ ग्यारहवें शतक तक प्रचलित थीं। विद्वान् लोग हिंदी भाषा और साहित्य के विकास को नीचे लिखे चार भागों में बाँटते है।

आदि हिंदी: यह उस हिंदी का नमूना है, जो अपभ्रंश से पृथक् होकर साहित्य कार्य के लिए बन रही थी। यह भाषा दो कालों में बांटी जा सकती है:(1) वीरकाल 1200–1400 और (2) धर्मकाल 1440–1600।

वीरकाल में यह भाषा पूर्ण रूप से विकसित न हुई थी और इसकी कविता का प्रचार अधिकतर राजपूताने में था। इसके बाहर के साहित्य की कोई विशेष उन्नति नहीं हुई। उसी समय महोबे में जगनिक कवि हुआ, जिसके किसी ग्रंथ के आधार पर आल्हा की रचना हुई। आजकल इस काव्य की मूल भाषा का ठीक पता नहीं लग सकता, क्योंकि भिन्न–भिन्न प्रांतों के लेखकों और गवैयों ने इसे अपनी बोलियों का रूप दे दिया है। विद्वानों का अनुमान है कि इसकी मूल भाषा बुंदेलखंडी थी और यह बात कवि की जन्मभूमि बुंदेलखंड में होने से पुष्ट होती है।

प्राचीन हिंदी का समय बतानेवाली दूसरी रचना भक्तों के साहित्य में पाई जाती है, जिसका समय अनुमान से 1400–1600 है। इस काल के जिन–जिन कवियों के ग्रंथ आजकल लोगों में प्रचलित हैं उनमें बहुतेरे वैष्णव थे और उन्हीं के मार्ग–प्रदर्शन से पुरानी हिंदी के उस रूप में, जिसे ब्रजभाषा कहते हैं, कविता रची गई। वैष्णव सिद्धांत के प्रचार का आरंभ रामानुज से माना जाता है जो दक्षिण के रहने वाले थे और अनुमान से बारहवीं सदी में हुए हैं। उत्तर भारत में यह धर्म रामानंद स्वामी ने फैलाया, जो इस संप्रदाय के प्रचारक थे। इनका समय सन् 1400 ईसवी के लगभग माना जाता है। इनकी लिखी कुछ कविताएँ सिक्खों के आदिग्रंथ में मिलती हैं और इनके रचे हुए भजन पूर्व में मिथिला तक प्रचलित हैं। रामानंद के चेलों में कबीर थे, जिनका समय 1512 ईसवी के लगभग है। उन्होंने कई ग्रंथ लिखे हैं, जिनमें साखी, शब्द, रेख्ता और बीजक अधिक प्रसिद्ध हैं। उनकी भाषा में ब्रजभाषा और हिंदी के उस रूपांतर का मेल है, जिसे लल्लू जी लाल ने (सन् 1803 में) खड़ी बोली नाम दिया है। कबीर ने जो कुछ लिखा है वह धर्म–सुधारक की दृष्टि से लिखा है, लेखक की दृष्टि से नहीं। इसलिए उनकी भाषा साधारण और सहज है। लगभग इसी समय मीराबाई हुईं, जिन्होंने कृष्ण की भक्ति में बहुत सी कविताएँ कीं। इनकी भाषा कहीं मेवाड़ी, और कहीं ब्रजभाषा है। इन्होंने राग गोविंद की टीका आदि ग्रंथ लिखे। सन् 1469 ई. से 1538 तक बाबा नानक का समय है। ये नानकपंथी सम्प्रदाय के प्रचारक और आदिग्रंथ के लेखक हैं। इस ग्रंथ की भाषा पुरानी पंजाबी होने के बदले पुरानी हिंदी है।

वैष्णव धर्म का एक और भेद है, जिसमें लोग श्रीकृष्ण को अपना इष्टदेव मानते हैं। इस संप्रदाय के संस्थापक वल्लभ स्वामी थे, जिनके पूर्वज दक्षिण के रहने वाले थे। वल्लभ स्वामी ने सोलहवीं सदी के आदि में उत्तर भारत में अपने मत का प्रचार किया। इनके आठ शिष्य थे, जो अष्टछाप के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये आठों कवि ब्रज में रहते थे और ब्रजभाषा में कविता करते थे। इनमें सूरदास मुख्य हैं, जिनका समय सन् 1550 ई. के लगभग है। कहते हैं, इन्होंने सवा लाख पस् लिखे हैं जिनका संग्रह सूरसागर नामक ग्रंथ में है। इस पंथ के चौरासी गुरुओं का वर्णन चौरासी वैष्णवन की वार्ता नामक ग्रंथ में पाया जाता है। जो ब्रजभाषा के गद्य में लिखा गया है, पर इस ग्रंथ का समय निश्चित नहीं है।



सत्येन्द्र सिंह, निरीक्षक / हि.अ.
सम्पादक–सह–प्रभारी,
जन संपर्क शाखा, महानिदेशालय

अकबर (1556–1605 ई.) के समय में ब्रजभाषा की कविता की अच्छी उन्नति हुई। अकबर स्वयं ब्रजभाषा में कविता करते थे और उनके दरबार में हिंदू कवियों के समान रहीम, फैजी फहीम आदि मुसलमान कवि भी इस भाषा में रचना करते थे। हिंदू कवियों में टोडरमल, बीरबल, नरहरि, हरिनाथ, करनेश और गंग आदि अधिक प्रसिद्ध थे।

मध्य हिंदी : यह हिंदी कविता के सत्ययुग का नमूना है, जो अनुमान से सन् 1600 से लेकर 1800 ई. तक रहा। इस काल में केवल कविता और भाषा ही की उन्नति नहीं हुई वरन् साहित्य विषय के भी अनेक उत्तम और उपयोगी ग्रंथ लिखे गए। मध्य हिंदी के कवियों में सबसे प्रसिद्ध गुसाईं तुलसीदास जी हुए, जिनका समय सन् 1573 से 1624 ई. तक है। उन्होंने हिंदी में एक महाकाव्य लिखकर भाषा का गौरव बढ़ाया और सर्वसाधारण में वैष्णव धर्म का प्रचार किया। राम के अनन्य भक्त होने पर भी गोसाईं जी ने शिव और राम में भेद नहीं माना और मत–मतान्तर का विवाद नहीं बढ़ाया। वैराग्य वृत्ति के कारण उन्होंने श्रीकृष्ण की भक्ति और लीलाओं के विषय में बहुत नहीं लिखा, तथापि कृष्ण गीतावली में इन विषयों पर यथेष्ट और मनोहर रचना की है। तुलसीदास ने ऐसे समय में रामायण की रचना की जब मुगल राज्य दृढ़ हो रहा था और हिंदू समाज के बंधन अनीति के कारण ढीले हो रहे थे। मनुष्य के मानसिक विकारों का जैसा अच्छा चित्र तुलसीदास ने खींचा है, वैसा और कोई नहीं खींच सका। रामायण की भाषा अवधी है, पर वह बैसवाड़ी से विशेष मिलती–जुलती है। गोसाईं जी के और ग्रंथों में अधिकांश ब्रजभाषा है। इस काल के दूसरे प्रसिद्ध कवि केशवदास, बिहारीलाल, भूषण, मतिराम और नाभादास हैं। केशवदास प्रथम कवि हैं, जिन्होंने साहित्य विषयक ग्रंथ रचे। इस विषय के इनके ग्रंथ 'कविप्रिया', रसिकप्रिया, और रामालकृतमजरी हैं। 'रामचंद्रिका' और 'विज्ञानगीता' भी इनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। इनकी भाषा में संस्कृत शब्दों की बहुतायत है। इनकी योग्यता की तुलना सूरदास और तुलसीदास से की जाती है। इनका मरणकाल अनुमान से सन् 1612 ईसवी है। बिहारीलाल ने 1650 ईसवी के लगभग 'सतसई' समाप्त की। इस ग्रंथरत्न में काव्य के प्रायः सब गुण विद्यमान हैं। इसकी भाषा शुद्ध ब्रजभाषा है। 'बिहारी सतसई' पर कई कवियों ने टीकाएँ लिखी हैं। भूषण ने 1671 ई. में 'शिवराजभूषण' बनाया और कई अन्य ग्रंथ लिखे। इनके ग्रंथों में देशभक्ति और

धर्माभिमान खूब दिखाई देता है। इनकी कुछ कविताएँ खड़ी बोली में भी हैं और अधिकांश कविताएँ वीर रस से भरी हुई हैं। चिंतामणि और मतिराम भूषण के भाई थे, जो भाषा साहित्य के आचार्य माने जाते हैं। नाभादास तुलसीदास के समकालीन थे। इन्होंने ब्रजभाषा में 'भक्तमाल' नामक पुस्तक लिखी जिसमें अनेक वैष्णव भक्तों का संक्षिप्त वर्णन है। इस काल के उत्तरार्ध 17–1800 ईसवी) में राज्यक्रांति के कारण कविता की विशेष उन्नति नहीं हुई। इस काल के प्रसिद्ध कवि प्रियादास, कृष्णकवि, भिखारीदास, ब्रजवासीदास, सूरति मिश्र आदि हैं। प्रियादास ने सन् 1712 ईसवी में 'भक्तमाल' पर एक (पद्य) टीका लिखी। कृष्णकवि ने 'बिहारी सतसई' पर सन् 1720 के लगभग एक टीका रची। भिखारीदास सन् 1723 के लगभग हुए और साहित्य के अच्छे कवि समझे जाते हैं। इनके प्रसिद्ध ग्रंथ छंदोर्णव और काव्यनिर्णय हैं। ब्रजवासीदास ने सन् 1770 ई. में 'ब्रजविलास' लिखा, जो विशेष लोकप्रिय है। सूरति मिश्र ने इसी समय में ब्रजभाषा के गद्य में 'बैताल पचीसी' नामक एक ग्रंथ लिखा। यही कवि गद्य के प्रथम लेखक हैं।

आधुनिक हिंदी: यह काल सन् 1800 से 1900 ईसवी तक है। इसमें हिंदी गद्य की उत्पत्ति और उन्नति हुई। अँगरेजी राज्य की स्थापना और छापे के प्रचार से इस शताब्दी में गद्य और पद्य की अनेक पुस्तकें बनीं और छपीं। साहित्य के सिवा इतिहास, भूगोल, व्याकरण, पदार्थ विज्ञान और धर्म पर इस काल में कई पुस्तकें लिखी गईं। सन् 1857 ई. के विद्रोह के पीछे देश में शान्ति स्थापना होने पर समाचार पत्र, मासिक पत्र, नाटक, उपन्यास और समालोचना का आरंभ हुआ। हिंदी की उन्नति का एक विशेष चिह्न इस समय यह है कि इसमें खड़ी बोली (बोलचाल की भाषा) की कविता लिखी जाती है। इसके साथ ही हिंदी में संस्कृत शब्दों का निरंकुश प्रयोग भी बढ़ता जाता है। इस काल में शिक्षा के प्रचार से हिंदी की विशेष उन्नति हुई। पादरी गिलक्राइस्ट की प्रेरणा से लल्लू जी लाल ने सन् 1804 ई. में 'प्रेम–सागर' लिखा जो आधुनिक हिंदी गद्य का प्रथम ग्रंथ है। इनके बनाए और प्रसिद्ध ग्रंथ 'राजनीति' (ब्रजभाषा के गद्य में), सभाविलास', लालचन्द्रिका' (बिहारी सतसई पर टीका), 'सिंहासन पचीसी' हैं। इस काल के प्रसिद्ध कवि पद्याकर, श्वाल, पजनेश, रघुराजसिंह, दीनदयालगिरि और हरिश्चंद्र हें।

गद्यलेखकों में लल्लू जी लाल के पश्चात् पादरी लोगों ने कई विषयों की पुस्तकें अँगरेजी से अनुवाद कराकर छपवाईं। इसी समय से हिंदी में ईसाई धर्म की पुस्तकों का छपना आरंभ हुआ। शिक्षा विभाग के लेखकों में पं. श्रीलाल, पं. वंशीधर वाजपेयी और राजा शिवप्रसाद हैं। शिवप्रसाद ऐसी हिंदी के पक्षपाती थे जिसे हिंदू–मुसलमान दोनों समझ सकें। इनकी रचना प्रायः उर्दू ढंग की होती थी। आर्य समाज की स्थापना से साधारण लोगों में वैदिक विषयों की चर्चा और धर्म संबंधी हिंदी की अच्छी उन्नति हुई। काशी की नागरी प्रचारिणी सभा ने हिंदी की विशेष उन्नति की है। उसने गत अर्धशताब्दी में अनेक विषयों के न्यूनाधिक सौ उत्तम ग्रंथ प्रकाशित किए हैं जिनमें सर्वांगपूर्ण हिंदी कोश और हिंदी व्याकरण मुख्य है। उसने प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों की नियमबद्ध खोज कराकर अनेक दुर्लभ ग्रंथों का भी प्रकाशन किया है। प्रयाग की हिंदी साहित्य सम्मेलन नामक संस्था हिंदी की उच्च परीक्षाओं का प्रबंध और संपूर्ण देश में उसका प्रचार राष्ट्रभाषा के रूप में कर रही है। उसने कई एक उपयोगी पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं।

इस काल के और प्रसिद्ध लेखक राजा लक्ष्मणसिंह, पं. अम्बिकादत्त व्यास, राजा शिवप्रसाद और भारतेंदु हरिश्चंद्र हैं। इन सब में भारतेंदु जी का आसन ऊँचा है। उन्होंने केवल 35 वर्ष की आयु में कई विषयों की अनेक पुस्तकें लिखकर हिंदी का उपकार किया और भावी लेखकों को अपनी मातृभाषा की उन्नति का मार्ग बताया। भारतेंदु के पश्चात् वर्तमान काल में सबसे प्रसिद्ध लेखक और कवि पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी, पं. श्रीधर पाठक, पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय और बाबू मैथिलीशरण हैं, जिन्होंने उच्च कोटि के अनेक ग्रंथ लिखकर हिंदी भाषा और साहित्य का गौरव बढ़ाया है। आधुनिक काल के अन्य प्रसिद्ध लेखक प्रेमचंद, पं. सुमित्रानंदन पंत, बाबू जयशंकर प्रसाद, पं. सूर्यकांत त्रिपाठी, पं. माखनलाल चतुर्वेदी, उपेंद्रनाथ अश्क, यशपाल, नंददुलारे वाजपेयी, जैनेंद्रकुमार दिनकर, बच्चन, श्यामसुंदर दास, रामचंद्र शुक्ल और रामचंद्र वर्मा हैं। कवयित्रियों में श्रीमती महादेवी वर्मा और सुभद्राकुमारी चौहान प्रसिद्ध हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल है बहुत महान



नितिन कुमार शर्मा, उ0नि0/जीडी
रि0प्र0के0, के.रि.पु.बल, श्रीनगर

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल है बहुत महान
करता है देश की सुरक्षा एवं सेवा इसका काम।
बाकी फौजो से है इसकी अलग पहचान
मानो यारो ये है भरोसे का दुजा नाम।
इसकी सुरक्षा की गारन्टी से सभी को आराम
चाहे संसद भवन का किस्सा हो या हो अयोध्या धाम।
देश के कौने–कौने से आते है इसमे जवान
बोलो चाहे इसको वेड़ा या मिनी हिन्दुस्तान।
इसने अपने हौंसलो से रखा है सबको हिलाये
जन सेवा की भक्ति में शामिल भी है महिलाये।
एस.डी.जी., पी.डी.जी. आर.ए.एफ एवं कोबरा है इसकी शान
बल की सेवा निष्ठा से हमको है अभिमान।
आर.टी.सी श्रीनगर भी है इस बल का एक हिस्सा
प्रशिक्षण मे है तत्पर, हर काम है इसका अच्छा।
बल का झण्डा उॅचा रहे, देश मे हो इसका नाम
भारत माता की जय बोलो, सी.आर.पी.एफ को करो सलाम।

राजभाषा कार्यान्वयन - जिम्मेदारी या अधिकार



सुधीर कुमार, (सू.मे./हि.अ.)
ग्रु0के0, के.रि.पु.बल, नई दिल्ली

सोमवार का दिन था। साहब बैठक में मशगूल थे, कि अचानक मोबाईल की घंटी बज उठी। सामने बैठे सभी अधिकारियों को ताकीद करते हुए कि बड़े आफिस से फोन है, महोदय ने फोन उठाया। मोबाईल पर कुछ निर्देश मिले और अंत में यह कहते हुए बड़े साहब ने फोन रख दिया कि ''सर हमारे कार्यालय में हिंदी अनुवादक का पद तो खाली है, क्यूँकि वो तो प्रतिनियुक्ति पर दूसरे विभाग में हैं। बाकि डाटा तैयार करने और बाकी की तैयारियों के लिए मैं अभी ''हिंदी बाबू'' को बता देता हूँ''।

फोन रखते ही साहब ने बेल बजाई और आदेश दिया कि जल्दी से ''हिंदी बाबू'' को बुलाओ। कक्ष में बैठे सभी अधिकारी आश्चर्यचकित थे, कि भाई क्या हुआ, आज ''हिंदी बाबू'' की पूछ क्यों हो रही है, वह भी बड़े साहब का फोन आने के बाद। थोड़ी ही देर में एक नौजवान व्यक्ति ''क्या मैं आ सकता हूँ, महोदय'', कहते हुए साहब के सामने उपस्थित हो गया। साहब ने एक नजर उस व्यक्ति पर डालते हुए पूछा, हाँ, तो आप ही हैं, जो हिंदी का कामकाज देखते हैं। उस व्यक्ति ने कहा, जी महोदय, मैं अभी हाल ही में स्थानांतरण पर आया हूँ।

साहब ने पूछा, हाँ, तो बताइए आपका हिंदी का कामकाज कैसा चल रहा है? उपस्थित हुए ''हिंदी बाबू'' ने बताया, महोदय, मैं तो रोकड़ अनुभाग का लिपिक हूँ, पिछले माह ही मुझे ''हिंदी टाईपिस्ट'' का कामकाज अतिरिक्त तौर पर दिया गया है। वैसे हिंदी अनुभाग का प्रभार तो हमारे मुख्य लिपिक रौशन साहब के पास है। बड़े साहब कुछ नाराज होते हुए बोले, ''तो उन्हें ही भेजिए ना''।

थोड़े ही अंतराल में मुख्य लिपिक रौशनजी बड़े साहब के सामने उपस्थित थे। साहब ने उन्हें आते ही बताया राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण करने के लिए संसदीय उपसमिति अगले माह हमारे कार्यालय में आने वाली है और हमारे कार्यालय का निरीक्षण भी किया जाना है। तो कार्यालय के कामकाज में राजभाषा कार्यान्वयन की क्या स्थिती है, मुझे अभी बताएं और बड़े कार्यालय से निरीक्षण डाटा की प्रश्नावली मेल में आई हुई है, उसके अनुसार सही–सही डाटा तैयार करके शाम तक प्रस्तुत करें। रौशन साहब निर्देश पाने के बाद वापिस जाने ही वाले थे कि साहब ने कहा, अरे, हाँ रौशन साहब, आपको डाटा लेकर परसों तक बड़े कार्यालय में भी जाना होगा, ताकि निरीक्षण से पूर्व हमारे कार्यालय के कामकाज में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की जा सके।

साहब के कक्ष से आते ही रौशन साहब सीधे प्रशासन अनुभाग के अधिकारी के समक्ष कुछ परेशान से उपस्थित हुए और उन्हें बताया कि महोदय, हिंदी का कोई निरीक्षण होना है, उसका डाटा तैयार करना है। अब इस कार्यालय के हिंदी अनुवादक तो पिछले तीन साल से प्रतिनियुक्ति पर हैं। मै तो पिछले महीने ही स्थानांतरण पर आया हूँ, और आपने मुझे हिंदी अनुभाग का काम भी अतिरिक्त तौर पर दे दिया है। मैं कोई हिंदी अनुवादक तो हूँ नहीं, मुझे क्या मालूम, क्या डाटा तैयार करना है।

प्रशासन अनुभाग के अधिकारी ने यह बात सुनते ही चश्मा नाक पर नीचे करते हुए प्रश्नभरी नजरों से रौशनजी को घूरा और बोले कि हिंदी अनुवादक का पद खाली है, तो कौन सा तूफान आ गया है और इसके साथ ही एक प्रश्नावली उनके सामने बहुत ही सहजता के साथ इस निर्देश के साथ सौंप दी कि कुछ नहीं भाई, हर तीन महीने में एक रिपोर्ट हिंदी अनुभाग से जाती है, उसी के आधार पर इस प्रश्नावली का डाटा भर दो। रौशन साहब कुछ बुदबुदाते हुए प्रस्थान करते हैं और अपने अनुभाग के लिपिक को, जिसे उन्होंने ही हिंदी टाईपिस्ट का कामकाज देखने के निर्देश दिए थे, तिमाही रिटर्न की फाईल देने के निर्देश देते हैं।

रौशन साहब की टेबल पर तिमाही रिटर्न की फाईल और निरीक्षण प्रश्नावली दोनों ही रखे हैं और वे स्वयं तथा हिंदी टाईपिस्ट, जो दोनों ही अतिरिक्त प्रभार देख रहे हैं, माथा–पच्ची कर रहे हैं कि प्रश्नावली के कालमों में क्या जानकारी भरी जाए। उन्हें कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। वैसे रौशनजी बहुत परेशान भी हैं क्योंकि उन्हें मालूम है कि यह काम है तो टेढ़ा है क्योंकि अपनी पिछली तैनाती के दौरान उन्होंने दो साल पहले देखा था कि संसदीय उप–समिति के निरीक्षण में उस कार्यालय के हिंदी अनुवादक तकरीबन एक माह तक पता नहीं क्या करते रहते थे, बहुत परेशान से रहते थे और हाँ अक्सर बड़े साहब के कक्ष में भागते रहते थे। उस समय की याद आते ही वे और सिहर गए और अपने आप से बोलने लगे ''ये किस झमेले में फँस गया रौशन''।

खैर, निरीक्षण प्रश्नावली का डाटा अलग–अलग मदों में भर पाना आसान बात तो थी नहीं, इसलिए परिणाम भी वही निकला, जो आप सोच रहे हैं। काफी माथा–पच्ची व डाँट–फटकार के बाद बड़े साहब ने हुक्म दिया, अरे कुछ समझ में नहीं आ रहा तो समय क्यूँ बरबाद कर रहे हैं, बड़े कार्यालय में सभी फाइलें लेकर चले जाएं, वहाँ पर अलग से हिंदी अनुभाग है, वहीं पर जाकर प्रश्नावली तैयार करा लें। इस आदेश के बाद रौशनजी की जान में जान आई और वे अपने हिंदी टाईपिस्ट के साथ उसी दिन शाम को बड़े कार्यालय के लिए रवाना हो गए।

बड़े कार्यालय में पहुँचते ही हिंदी अनुभाग में बैठे सहायक निदेशक महोदय के पास फाइलें रख दी और बोले साहब ये तो हिंदी अनुवादक का काम है, मैं तो मुख्य लिपिक हूँ, मैं इस बारे में क्या जानूं। कृपया आप ही इसे तैयार करवाने में सहायता करें। सहायक निदेशक महोदय ने चश्मा नीचे नाक पर करते हुए उन्हें देखा और बोला अरे भाई, आप इतने पुराने आदमी हैं, कुछ तो डाटा तैयार करके लाते। इतना सुनते ही रौशनजी बोले सर ये काम तो हिंदी अनुवादक

का होता है, जो हमेशा इन्ही आँकड़ों में उलझा रहता है, तो हमें कैसे इस बारे में मालूम होगा।

सहायक निदेशक महोदय धीरे से मुस्काए और बोले भाई हर बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन की सभी व्यवस्थाओं के बारे में विस्तार से बताया जाता है, उसके बाद जो डाटा अनुभागों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, उन्हें ही तो हम बैठक में प्रस्तुत कर समीक्षा करते हैं और उन्हीं के आधार पर ये निरीक्षण प्रश्नावली का डाटा भी बनेगा। अब रौशनजी थोड़ा खिसियाते हुए बोले, महोदय, वो (हिंदी अनुवादक) तो स्नातकोत्तर डिग्री वाले होते हैं, काफी पढ़े–लिखे, इसलिए कर लेते हैं। अब सहायक निदेशक महोदय भी उत्तर देने की स्थिति में नहीं थे और इसका कुछ फायदा भी नहीं था।

खैर किसी तरह निरीक्षण प्रश्नावली का डाटा उपलब्ध फाईलों के आधार पर तैयार करवा दिया गया, जिसमें पाया गया कि काफी सूचनाएं अप्रामाणिक थीं। अतः उन्हें ठीक करवाते हुए सहायक निदेशक महोदय ने रौशनजी को कई ताकीदें दी। साथ ही अपने अनुभाग के एक नवनियुक्त हिंदी अनुवादक को निदेश दिए कि वे जाकर पहले उनके कार्यालय का निरीक्षण करें तथा यदि कोई कमियाँ हों, तो उन्हें ठीक करवाएं।

अगले ही सप्ताह हिंदी अनुवादक निरीक्षण हेतु पहुँच गए, निरीक्षण से संबंधित सभी मदों के अनुपालन हेतु लिखित में सुझाव दिए व अंत में कार्यालय अध्यक्ष से चर्चा का समय आया। बड़े साहब ने मिलने पर बताया कि भाई हमारे कार्यालय के हिंदी अनुवादक तो पिछले कई वर्षों से प्रतिनियुक्ति पर हैं, इसलिए राजभाषा कार्यान्वयन की सुनिश्चिती देखनेवाला कोई नहीं है। हिंदी अनुवादक के बताने पर कि महोदय ये संवैधानिक जिम्मेदारी तो कार्यालय अध्यक्ष, पत्रों पर हस्ताक्षर करनेवाले अधिकारी, अनुभाग प्रभारी व सहायकों की ही है, इसमें हिंदी अनुवादक की कोई भूमिका होती ही नहीं है। वह तो सिर्फ इस कार्य में कार्यालय अध्यक्ष की सहायता के लिए है। और हाँ, कार्यालय की कार्यप्रणाली में हिंदी अनुवादक तो पत्र हस्ताक्षर होने के बाद ही कभी कभार डाक भेजते समय प्रेषण लिपिक के पास देख पाता है अन्यथा उसकी कार्यालयीन कामकाज में कहीं कोई भूमिका ही नहीं होती है। फिर इस कार्य के लिए हिंदी अनुवादक जिम्मेदार कैसे हो सकता है? कार्यालय अध्यक्ष महोदय ने जब हिंदी अनुवादक की ड्यूटियाँ और कार्यालय की आंतरिक कार्यप्रणाली के बारे में पता किया, तो यही पाया। और हाँ हिंदी अनुवादक ने यह भी साहब को बता दिया कि महोदय निरीक्षण के दौरान सभी प्रश्नों के जवाब आपको ही देना होगा, इसलिए प्रश्नावली के प्रश्नों और दिए गए आँकड़ो की आपस में सहबद्धता को भी आपको ही समझना होगा। इसके बाद कार्यालय अध्यक्ष ने काफी गहराई से विभिन्न व्यवस्थाओं की जानकारी ली।

खैर संसदीय उपसमिति के निरीक्षण के दौरान आने वाले कठिनाईयों व तैयारियों का विवरण देना इस मंच पर उचित नहीं है, तथापि यही बताना चाहूँगा कि अथक प्रयासों के बाद राजभाषा निरीक्षण तो बड़े आफिस की हिंदी शाखा के समन्वय, सहयोग व मार्गदर्शन से अच्छी तरह से सम्पन्न हो गया, किन्तु निरीक्षित कार्यालय के कार्यालय अध्यक्ष, अधिकारियों, पर्यवेक्षक अधिकारियों विशेषकर रोशनजी और हिंदी टाईपिस्ट के मन में अपने पीछे कई यह प्रश्न छोड़ गया, जिस पर विचार किया जाना अभी भी बाकी है :–

(1) कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की संवैधानिक जिम्मेदारी के निवर्हन में कार्यालय में तैनात हिंदी अनुवादक को किस तरह से सीधे तौर पर जोड़ा जा सकता है?

(2) अधिकार और कर्त्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू होते हैं, एक के बिना दूसरा अधूरा है, तो फिर राजभाषा कार्यान्वयन को एक जिम्मेदारी के तौर पर क्यों देखा जाए, इसे एक अधिकार के तौर पर क्यों न देखा जाए?

(3) आजादी के इतने वर्षों बाद भी राजभाषा कार्यान्वयन एक संवैधानिक जिम्मेदारी क्यों है, इसे एक आम भारतीय नागरिक का अधिकार क्यों नहीं माना जाता?

(4) कार्यालय में हिंदी अनुभाग तो अलग से होता है, किन्तु उसमें हिंदी अनुवादक के अलावा कोई और अन्य कार्मिक क्यों पदस्थ नहीं किया जाता? क्या हिंदी अनुभाग के तहत प्रेषण लिपिक, प्राप्ति लिपिक, पुस्तकालय लिपिक, अभिलेखपाल, स्टेशनरी लिपिक इत्यादि को पदस्थ कर दिया जाना चाहिए, ताकि राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी बनाया जा सके, क्योंकि प्रत्येक कार्यालय में इन्हीं कार्मिकों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी मदों पर कार्य किया जाता है।

(5) क्या हिंदी अनुवादक को सामान्य सरकारी कामकाज के साथ जोड़ा नहीं जाना चाहिए, यदि जोड़ा जाए, तो किस भूमिका में व किस तरह से, ताकि वह कार्यालय के अनुभागों में प्रभावी तरीके से राजभाषा कार्यान्वयन सुनिश्चित करते हुए कार्यालय की कार्यप्रणाली में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कर सके?

(6) क्या व्यवस्थाएं की जाएं, ताकि हिंदी अनुवादक का पद रिक्त रहने पर भी राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य प्रभावी रूप से सतत् चलता रहे?

यदि आपके मन में कभी ऐसे प्रश्न उठे हों व आपके पास इन प्रश्नों के उत्तर/सुझाव हों, तो कृपया हिंदी दिवस के अवसर पर या अगली तिमाही बैठक में इनके जवाब अवश्य दीजिएगा, ताकि कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी बनाने हेतु सार्थक प्रयास किए जा सकें व साथ ही उच्च शिक्षित हिंदी अनुवादक के कार्यालय में तैनात रहने पर उनका भरपूर फायदा कार्यालयीन कामकाज में भी लिया जा सके। आपके सहयोग व सुझावों की अपेक्षा में ..... भारत माता के माथे की बिन्दी – हमारी प्यारी हिंदी।

विश्व हिन्दी सम्मेलन

विश्व हिंदी सम्मेलन की संकल्पना केवल एक आयोजन की खानापूर्ति नहीं है अपितु विश्व हिंदी सम्मेलन उन सभी अनुत्तरित प्रश्नों का हल ढूढ़ने का एक ऐतिहासिक अवसर होता है। अब तक कुल 10 विश्व हिंदी सम्मलेन सम्पन्न हो चुके हैं और इस दसवीं विश्व हिंदी सम्मेलन विश्व स्तर पर भारत की मेजबानी में 10 से 12 सितंबर, 2015 तक भारत के हृदय प्रदेश–मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में आयोजित की गई जिसका उद्देश्य वैश्विक स्तर पर हिंदी को विशेष पहचान दिलाने के साथ ही हिंदी को वैश्वीक स्तर पर खास मौका दिलाना था। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज द्वारा दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन को ऐतिहासिक अवसर बनाने की घोषणा का औचित्य केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों, हिंदी सेवियों, हिंदी से जुड़ी भावी योजनाओं और कार्यक्रकों की दिशा एवं स्वरूप तय करने तथा उन्हें मूर्तरूप देना था।

भारत में 40 साल पूर्व 1975 (10–12 जून) में नागपुर में आयोजित पहले विश्व हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गॉधी और मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम ने उपस्थित 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए हिंदी को विश्व भाषा के गौरव लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए समर्पित भाव से काम करने का विश्व के हिंदी प्रेमियों का आवाह्न किया गया था।

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के मराठी भाषी सूत्रधार रहे अनंत गोपाल शेवड़े के प्रयासों से दूसरा विश्व हिंदी सम्मेलन अगले ही वर्ष 1976 में 28 से 30 अगस्त तक मॉरीशस में आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में 17 देशों के 181 प्रतिनिधियों की ऐतिहासिक उपस्थिति में हिंदी को ''वसुधैव कुटुंबकम्'' की भाषा के रूप में स्थापित करने के संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ। मॉरीशस के उस समय के प्रधानमंत्री, भारतीय मूल के गिरमिटिया मजदूर के वंशज सर शिवसागर राम गुलाम थे। उन्होंने मॉरीशस को हिंदी का वैश्विक केंद्र बनाने की संकल्पना व्यक्त की थी। मारीशस की हिंदी–भोजपुरी के प्रति संकल्पबद्धता को ध्यान में रखकर वहॉ विश्व हिंदी सचिवालय की आधारशिला वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी हाल की मॉरीशस यात्रा में प्लेन्स विलियम्स के फीनिक्स नगर में रखी है, जिसके औचित्य और व्यवहारिकता के संबंध में कोई संदेह नहीं व्यक्त किया जा सकता।

वर्ष 1983 में नई दिल्ली में आयोजित तृतीय तथा दस साल के लंबे अंतराल और मौन के बाद पोर्ट लुईस (मॉरीशस की राजधानी में) 1993 में संपन्न चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी और हिंदी प्रेमियों की तंद्रा टूटती दिखाई पड़ी। ट्रिनिडाड और टाबैगो के पोर्ट ऑफ स्पेन में आयोजित पंचम विश्व सम्मेलन ने हिंदी की मुहिम को नई जागृति प्रदान की। सन् 1999 में लंदन और पारामारीबो, सूरीनाम में 2003 में आयोजित सम्मेलन हिंदी को विश्व भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में मील का पत्थर भले ही साबित नहीं हो सके पर हिंदी की प्रगति में इन सम्मेलनों का ऐतिहासिक अवदान रहा।



रमेश कुमार पाण्डेय, निरी./हि.अनु.
कर्नाटक–केरल सेक्टर
मुख्यालय, के.रि.पु.बल, बेंगलूरू

इस दिशा में न्यूयार्क (अमेरिका) में संपन्न वर्ष 2007 का सम्मेलन विश्व के हिंदी प्रेमियों और साधकों में नये उत्साह का संचार करने में बेशक कामयाब रहा। सम्मेलन के प्रस्तावों को मूर्त रूप देने हेतु विश्व स्तर पर नये समर्पित हिंदी सेवी और हिंदी सेवी संस्थाएं सामने आई। इससे प्रेरित होकर अनेक प्रकाशक विभिन्न देशों में सामने आए। दक्षिण अफ्रीका की राजधानी जोहान्सबर्ग में 2012 में संपन्न अद्यतन सम्मेलन का स्वरूप और फलक काफी विस्तृत रहा। इससे पहले के सम्मेलनों की मूल भावनाओं, संकल्पों और सरोकारों को समाहित करते हुए यहां जो प्रस्ताव पारित हुए और जिस प्रकार की प्रतिबद्धता सम्मेलन के बाद के तीन वर्षों में अब तक दिखाई पड़ी, वह इस सम्मेलन की सकारात्मक की साक्षी है। अफ्रीका से भारत और खासकर महात्मा गॉधी के जीवंत संबंधों के साथ ही अन्य कारणों से हिंदी के प्रति यहां जो भावनात्मक प्रतिक्रिया प्रकट हुई, वह हिंदी की प्रगति यात्रा की ऐतिहासिक थाती बन गई। हिंदी प्रेमियों ने अफ्रीकी राष्ट्रपति डॉ. नेल्सन मंडेला के भारत प्रेम का भावपूर्ण नमन किया। जोहान्सबर्ग विश्व हिंदी सम्मेलन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण संकल्प था–युवा पीढ़ी में हिंदी के प्रति ऐसा भाव पैदा करना, जिसके माध्यम से सूचना प्रौद्योगिक के उपकरणों तथा माध्यमों जैसे–मीडिया, सोशल मीडिया, फिल्मों, वाणिज्य–व्यापार तथा बाजार में हिंदी का प्रयोग बढ़े। इसी प्रकार महात्मा गॉधी की संकल्पना–दृष्टि के अनुसार हिंदी के वैश्वीकरण की दिशा में मौलिक प्रयासों पर बल दिया गया।

पूर्व के विश्व हिंदी सम्मेलन के प्रस्तावों के अमल पर सृजित वर्धा के महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की भूमिका पर हुई चर्चा में विश्वविद्यालय की भूमिका पर विशेष घ्यान दिए जाने पर बल दिया गया। प्रथम सम्मेलन के प्रस्तावों के क्रम में मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना महत्वपूर्ण उपलब्धि अवश्य है, परन्तु इसकी भूमिका और कार्यप्रणाली में स्पष्टता एवं पूर्ण सक्रियता के अभाव को दूर करना आवश्यक है। विदेशी छात्रों के लिए लघु हिंदी पाठ्यक्रमों, प्रवासी हिंदी लेखकों के प्रोत्साहन, उनकी रचनाओं के प्रकाशन, हिंदी और हिंदी विद्वानों का डाटा बेस तैयार करने, भारतीय आई.आई.टी (प्रौद्योगिकी संस्थानों) में हिंदी भाषा संबंधी तकनीकी के विकास, विदेशियों के हिंदी शिक्षण हेतु मानक पाठ्यक्रम तैयार करने, देव नागरी के लिए उपयुक्त (फांट संबंधी समस्याओं के निराकरण सहित) सॉफ्टवेयर विकसित करने तथा विषयक (थिमेटिक) क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलनों के आयोजन संबंधी नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन के प्रस्तावों को मूर्त रूप देना अभी शेष होने के साथ–साथ चुनौती भी है।

हमें भारतीय होने पर गर्व होता है

एक प्रश्न हमारे दिमाग में हमेशा कौंधता रहता था कि हमें भारतीय होने पर गर्व क्यों करना चाहिए? इस प्रश्न का जबाव अपने आप से तथा सहपाठियों से पूछता रहता था, जिसका जबाव होता था, हमनें यहॉ जन्म लिया, यह हमारी जन्मभूमि है और हमारे सभी कार्य व प्रकार्य यहीं से फलीभूत हुए है व यह हमारी कर्मभूमि भी है, परन्तु इस जबाव से सहजता प्राप्त नही होती थी, ऐसा लगता था कि कोई बचकानी सी जबाव हमारे सामने आई हो, क्योंकि यह तो हर देश के नागरिकों के साथ उसके देश के प्रति होता होगा, हमारे देश में ऐसा क्या है ? अपने कॉलेज लाईफ में मेरे यह संज्ञान में आया कि किसी भी देशवासी को उस देश विशेष पर गर्व उस देश के नैतिक मूल्यों व आदर्शो में निहितार्थ के लिए होता है और उस देश में अन्य देशों से क्या अलग है और उसने विश्व समुदाय को क्या दिए, जिसके लिए वह सम्मानित/गर्वान्वित महसूस करें, जिसका तपाक से मेरे जेहन में जबाव आया कि हमारे भारत में तो ये सब कुछ है ही।

भारतीय संस्कृति में समाहित करने की शक्ति है। वास्तव में हमारें यहॉ प्राचीन काल में विदेशियों में शक, कुषाण, हूण, तो वहीं मध्यकाल में अफगानी, ईरानी, तुर्की आए। ये आये तो थे यहॉ शासन करने, परन्तु यहॉ की संस्कृति में इनका आत्मसातीकरण हो गया और ये यहीं वस गए। इन्होंने यहीं अपनी जीविकोपार्जन करना शुरू कर दिया। अंग्रेज भी यहॉ आए, पर उसकी नियत तो भारत को केवल उपनिवेश बनाना था, ऐसे में भारतीय संस्कृति में समाहित नहीं हो पाना लाजमी था। भारतीय संस्कृति में ये भी समाहित हो जाते, परन्तु इनका लक्ष्य तो केवल भारतीय धन सम्पदा को अधिक से अधिक लूट कर ले जाना था।

भारतीय संस्कृति में सहिष्णुता और समरसता है, जो भारतीय एकता व अखण्डता का आधार है। भारत में भौगोलिक विविधताएँ है–उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में होने के नाते यहॉ वर्षा औसत से अधिक (100 सेमी. से अधिक) होती है, कहीं यह 200 सेमी. तक(उत्तर पूर्व एवं दक्षिण–पश्चिमी तटीय मालाबार क्षेत्र), तो कहीं 100 सेमी(विशाल उत्तर एवं मध्य भू–भागीय क्षेत्रों में), तो कहीं 25 सेमी से भी कम है(राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र, जम्मू कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र आदि)। औसत से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में एवं नदियों के प्रवाह दिशा में बदलाव के कारण बाढ़, तो वहीं औसत से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सूखे जैसी आपदा के कारण वहॉ की आबादी कम देखने को मिलती है। वहीं दूसरी ओर औसत वर्षा वाले जलवायु प्रदेशों की आबादी औसत से कहीं अधिक है, उदाहारणार्थ उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल आदि। हॉलाकि वर्तमान परिदृश्य में मानव जनित आपदाएँ भी देखने को मिलती है। भौगोलिक विषमता के कारण यहॉ क्षेत्रीय विसंगतियॉ है, पर्वत, पठार, मैदानी भू–भाग, मरूस्थल और तटीय मैदान होने के कारण लोगों के शारीरिक संरचना में विभिन्नता है, तो भाषायी और नृजातीय विषमता भी विद्यमान है–अर्थात हर व्यक्ति किसी न किसी क्षेत्र, नस्ल, भाषा के आधार पर अपनी अपनी अलग पहचान रखते है, बावजूद इसके, उसमें एक भावना अवश्य होती है, वह है भारतीयता की, यही तो समरसता है, जो भारत को अन्य देशों से अलग एक विशिष्ट पहचान दिलाती है।

राजनीतिविदों के अनुसार एक देश की परिभाषा है –''वह भौगोलिक अवस्थिति, जिसमें रहने वाले लोगों की भाषा, नस्ल अथवा क्षेत्र एकसमान हो'', परन्तु भारत ऐसे किसी भी संगतियों से अलग है और फिर भी एक देश है, जो इसके मूल्य ''अनेकता में एकता'' को दर्शाता है।



राम कुमार, (स.उ.नि./मंत्रा.)
जन संपर्क शाखा, महानिदेशालय

संकट के समय हर भारतीय एकजुट होते रहे हैं, प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के आह्वान पर हमनें एक दिन का अन्न त्याग किया ताकि देश की सीमा पर लड़ रहे जवानों को भोजन मिल सके। अप्रवासी भारतीय के सम्मेलनों में भारत से बाहर रह रहे सभी भारतीय उसमें बेहिचक भाग लेते है, उनमें ये भावना नहीं होती कि वे हिन्दू है, मुस्लिम है, सिक्ख है अथवा बौद्ध या ईसाई, उनमें केवल एक ही भावना दिखती है, वह है भारतीयता की।

वैसे तो विज्ञान–तकनीक के क्षेत्र में कई शोध किए जाते रहे है, परन्तु महान वैज्ञानिक एल्बर्ट आईन्सटीन द्वारा भारत द्वारा शून्य की खोज व विश्व में इसके योगदान के लिए कही गई यह उक्ति हमेशा हमें भारतीय होने के लिए गर्वान्वित महसूस कराती है :–

''हम सभी भारतीयों का अभिवादन करते है, जिन्होंने हमें गिनती करना सिखाया, जिसके बिना विज्ञान की कोई भी खोज संभव नहीं थी।''

हमें गर्व इसलिए भी होता है कि इतने बड़े भारतीय महाद्वीप के आजादी के लड़ाई में एक महान नायक–महात्मा गांधी आते है और पूरी दुनिया को अहिंसा का पाठ पढ़ाते है और देश को आजाद कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। और इन्ही के नक्शे कदम पर दक्षिण अफ्रीका के महापुरूष नेल्सन मंडेला रंग भेद जैसी कुरीतियों से वहां की जनता को आजादी दिलाए। महात्मा गांधी के बारे मे महान वैज्ञानिक आईन्सटीन कहते है ''आने वाला भविष्य शायद ही ऐसा विश्वास करेगा कि हाड़–माँस का बना ऐसा भी पुतला धरती पर कभी चला है''। सरदार बल्लभ भाई पटेल जिन्होंने बिना रक्त व रंजिस के 500 से अधिक रियासतों, जोकि भारतीय भू–भाग के लगभग 40 प्रतिशत क्षेत्र थे, को भारतीय गणराज्य में शांतिपूर्ण तरीके से मिलाकर, दुनिया को एकीकरण का नया पर्याय प्रस्तुत किया।

हमें गर्व होता है डॉ0 भीम राव अम्बेडकर जैसे महामानव पर, जो भारत की पवित्र मिट्टी में जन्म लिये और भारत का संविधान रच दिये, क्योंकि फ्रांस जैसे विकसित राष्ट्र से लेकर अन्य विकासशील राष्ट्रों में कई बार सविंधान लिखा गया और बदला गया। यह हमारा संविधान ही है, जो भारत के अलग–अलग पहचान रखने वालों को भी एक विशिष्ट पहचान भारतीयता का और भारतीय होने

की भावना से लवालव कराती है और यही कारण है कि हमें विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक गणराज्य होने पर गौरव महसूस करते हैं।

परन्तु हमें हमारे नैतिक मूल्यों और आदर्शो को बरकरार रखने के लिए हमेशा प्रगतिशील रहना होगा और देश को आर्थिक रूप से सशक्त और विकसित होना होगा ताकि देश की अंतिम जनता तक न्यूनतम सुविधायें उपलब्ध हो सके जैसा कि महात्मा गांधी ने भी कहा हैं, क्योंकि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर व्यक्ति ही राष्ट्र के समावेशी विकास और भारत के आदर्श ''सबका साथ सबका विकास'' को चरितार्थ कर पाएंगे और लोग देश विरोधी असामाजिक तत्वों, अलगावादी ताकतों व सीमापार आंतकवाद अथवा आतंरिक कलह से दूर रह पायेगें और हम भारतीयता की भावना से गर्वान्वित महसूस करते रहेंगे।

ऐसी है मेरी हिंदी



राकेश कुमार,
उ.नि./मं., जन संपर्क शाखा

जन–जन की भाषा है हिंदी,
भारत की आशा है हिंदी ।
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है,
वे मजबूत धागा है हिंदी ।
हिन्दुस्तान की गौरवगाथा है हिंदी,
एकता की अनुपम सूत्र है हिंदी ।
जिसके गर्भ से रोज नई कोंपलें फूटती है,
ऐसी कामधेनु धरा है हिंदी ।
जिसने गुलामी में क्राति की आग जलाई,
ऐसे वीरों की जननी है हिंदी ।
जिसके बिना मजा न आए,
ऐसी जीवनरेखा है हिंदी ।
जिसने सभी का दिल जीत लिया,
ऐसी प्यारी भाषा है हिंदी ।

78वीं वार्षिक परेड में वी.आई.पी. टुकड़ी प्रथम

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 78वीं वार्षिक परेड के अवसर पर दिनांक 27 जुलाई 2017 को सी. आर. पी. एफ अकादमी, गुड़गॉव में पहली बार वी.आई.पी. सुरक्षा टुकड़ी को मार्चिंग दस्ते में सम्मिलित किया गया। महिला बटालियन, द्रुत कार्य बल और उत्तरी सेक्टर की दिल्ली केन्द्रित बटालियनों के साथ कदम से कदम मिलाती वी.आई.पी. सुरक्षा की जोशीली टुकड़ी को नव–प्रदत्त परिधान में परेड करते देख दर्शकों ने जोरदार तालियों से सराहा। निर्णायक मंडली ने 220, 221, 224 एवं 235 बटालियन से शामिल वी. आई. पी. सुरक्षा दस्ते को श्री राजेन्द्र सिंह, सहायक कमाण्डेंट के कुशल नेतृत्व में 'सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग कन्टींजेन्ट' घोषित किया ।



उल्लेखनीय है कि पूरे परेड की तैयारी हेतु एक सप्ताह की अल्प समयावधि थी और ऐसे में उत्कृष्टता के मानकों पर खरा उतर कर इस नये बल ने एक प्रशंसीनय कार्य किया है ।



महिलाओं से दुर्व्यवहार का दोषी कौन?

जब भी हम अखबार पर नजर डालते हैं या टीवी पर समाचार देखते हैं तो किसी महिला के साथ हुए बलात्कार या छेड़खानी के समाचार अवश्य सामने आते हैं। यह रोज की बात है। कोई भी दिन ऐसा नहीं जाता जब देश में कोई ऐसी घटना न घटी हो।

किंतु हद तो तब हो गई जब स्वतंत्रता दिवस के दिन 15 अगस्त, 2017 को चण्डीगढ़ में एक नाबालिक स्कूली छात्रा के साथ दिन में एक दरिन्दे ने बलात्कार किया। जब सारा देश आजादी की भावना से ओतप्रोत होकर जश्न–ए–आजादी मना रहा था, जब चारों ओर आजादी पर बड़े–बड़े व्याख्यान दिए जा रहे थे, ठीक उसी समय उस बच्ची के साथ यह अत्याचार किया गया। यह बच्ची स्कूल से स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग लेकर एक छोटे रास्ते से घर वापिस आ रही थी कि उस बलात्कारी ने उसे निर्जन स्थान पर अकेली पाकर उसके साथ जबरदस्ती की।

क्या ऐसी घटनाओं को सुनकर हमारा सिर शर्म से झुक नहीं जाना चाहिए? क्या हमें ऐसी घटनाएं रोकने के लिए कुछ करना नहीं चाहिए? समाज और देश को शर्मसार करने वाली ऐसी घटनाएं रोज हो रही है, चलती ट्रेन में, बस में, कार में, पार्क में, स्कूल में, अस्पताल में, मंदिर में, मस्जिद में, पड़ौस में, घर में, सड़क पर, जहां भी किसी महिला को अकेला पाया जाता है, पुरुष राक्षस बन जाता है। वह उसे सिर्फ भोग की वस्तु नजर आती है, फिर चाहे वह 3 वर्ष की बच्ची हो, या फिर 70 साल की बुजुर्ग महिला।

70 साल की आजादी के बाद भी हमारे देश में महिलाएं आजाद नहीं हैं। सुरक्षित नहीं हैं। कौन है इसके लिए जिम्मेदार, क्या हमने स्वयं सोचा है कभी इस पर? शायद नहीं? जब इंसान के किसी प्रियजन पर यह घटता है तभी उसे महसूस होता है कि यह कितनी बड़ी क्रूरता है, कितना बड़ा अत्याचार है, कितनी बड़ी दरिन्दगी है।



मंगत राम, निरीक्षक/हि.अनु.
हिन्दी शाखा, महानिदेशालय

हम अपनी बेटियों को तो बचपन से ही कदम–कदम पर, सुबह–शाम, उठते–बैठते यह समझाते रहते हैं कि ऐसा मत करो, वैसा मत करो, अकेली बाहर मत जाओ, शाम को घर जल्दी आना, ऐसे कपड़े मत पहनो, वैसे कपड़े मत पहनो, इधर–उधर मत देखो आदि–आदि। किंतु शायद ही कोई परिवार होगा जो अपने बेटों को ऐसी शिक्षा देता होगा कि किसी भी लड़की या महिला के साथ दुर्व्यवहार मत करो, क्योंकि यदि तुम ऐसा करोगे तो दूसरे लोग भी तुम्हारी बहन, मां, बेटी, बीवी को बाहर अकेली देखकर उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करेंगे। हर महिला, हर लड़की, किसी न किसी की बेटी है, मां है, बहन है, या बीवी है। लड़कों से यह कभी नहीं पूछा जाता कि तुमने किसी महिला के साथ बदतमीज़ी तो नहीं की।

यदि बचपन से बेटों में ऐसी सोच विकसित की गई होती तो शायद ऐसी परिस्थितियां नहीं आती जैसी आज हैं। अतः हमें यह सोचना चाहिए कि क्या ऐसी परिस्थितियों के लिए हम स्वयं जिम्मेदार नहीं है। विशेषकर महिलाओं को ईमानदारी और सच्चाई से अपने पुत्र, पति, भाई या घर के अन्य पुरुष से ऐसा सवाल करना चाहिए। माताएं अपने पुत्रों को ऐसी परवरिश दें, क्योंकि उन्होंने अवश्य ऐसी छेड़खानी या दुर्व्यवहार की पीड़ा को सही होगी। अतः अब समय आ गया है कि बेटों को भी बचपन से ही ऐसी शिक्षा दी जाए कि वे महिलाओं का सम्मान करना सीखें।

ग्रुप केन्द्र बनतालाब को राजभाषा शील्ड एवं प्रशंसा-पत्र

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, उत्तर क्षेत्र–1, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2015–16 की अवधि के लिए संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए 'ग' क्षेत्र के कार्यालयों के बीच ग्रुप केन्द्र बनतालाब को '' द्वितीय स्थान '' के लिए चुना गया । इस स्थान को हासिल किए जाने पर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, उत्तर क्षेत्र–1, नई दिल्ली द्वारा आगरा (उत्तर–प्रदेश) में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान माननीय गृह राज्य मंत्री श्री किरेन रिजीजू द्वारा दिनांक 06 अक्तूबर 2016 को इस ग्रुप केन्द्र को ''राजभाषा शील्ड'' एवं ''प्रशंसा–पत्र'' प्रदान किया गया ।



श्री किरेन रिजीजू, माननीय गृह राज्यमंत्री से राजभाषा शील्ड एवं प्रशंसा–पत्र प्राप्त करते हुए श्री आर0एस0 राठौड़, सहा0कमा0

राष्ट्रीय एकता में हिंदी का महत्व

यह पढ़कर अक्सर ही हम जो शहरों अथवा महानगरों में बैठे हैं, उन्हें हँसी आती है। पढ़े लिखे लोग जो बड़ी–बड़ी कंपनी में नौकरी कर रहे हैं, उन्हें आज के समय में हिंदी का कोई भविष्य दिखाई नहीं देता। उनका मानना भी सही है क्योंकि वे अपने आस–पास के दायरे में रहकर सोच रहे हैं। उन्हें एक सफल भविष्य जिसमें नौकरी, पैसा एवं ऐशो–आराम है। उसके लिए हिंदी का होना जरूरी नहीं लगता। लेकिन वही जब एक क्षितिज पर खड़े होकर एक व्यक्ति देश के भीतर झांकता है तो उसे लोगों के मध्य एक बहुत बड़ा मतभेद दिखाई देता है और यह मतभेद इन पढ़े–लिखे लोगों को ही अकेला कर रहा है क्योंकि देश में आज भी हिंदी भाषी ज्यादा हैं। माना कि ये हिंदी भाषी तकनीकी ज्ञान से दूर हैं लेकिन आज भी तकनीकी एकता से ज्यादा मानवीय एकता महत्व रखती है। मानवीय एकता तब ही आएगी जब सभी में समानता होगी और मतभेद कम होगा।

यह मदभेद भाषा का मतभेद है। अंग्रेजी आज की जरूरत है लेकिन क्या जरूरत के लिए नींव को छोड़ा जा सकता है ? अगर हिंदी को इस तरह से प्रथक कर दिया जाएगा तो गाँव और शहरों में बढ़ता मतभेद और गहरा हो जाएगा जोकि देश के विकास में एक बड़ी बाधा है।

भाषा व्यक्ति को जोड़ती है। व्यक्तियों को जोड़ने से परिवार बनता है। परिवारों के जुड़ने से समाज बनता है। समाज से गाँव, गाँव से शहर, शहरों से महानगर और महानगरों से देश। इस प्रकार देश के विकास में इस जुड़ाव का मजबूत होना आवश्यक है। खासतौर पर यह जुड़ाव भाषा के माध्यम से ही मजबूत हो सकता है क्योंकि देश में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाशा हिंदी है। जब तक इसका विकास नहीं होगा तब तक देश के विकास में बाधा पहुँचेगी। इसे निम्नलिखित उदाहरण से समझा जा सकता है।



अमीरूद्दीन, निरीक्षक/हि.अनु.
ग्रु0के0, के.रि.पु.बल, हीरानगर

आज डिजिटलाईजेशन को भारत में जोरों शोरों से लाया जा रहा है जिसमें सबसे पहले गाँवों को टारगेट किया जा रहा है। इन्टरनेट को देश के प्रत्येक कोने में लाने का काम हो रहा है लेकिन यह तब तक संभव नहीं है जब तक यह काम हिंदी में ना किया जाए। यदि आप सोचें कि प्रत्येक व्यक्ति पहले अंग्रेजी पढ़ना, लिखना सीखे फिर जाकर इन्टरनेट पर गूगल करे तो इसमें कई सदियां व्यतीत हो जाएंगी। यह असंभव नहीं है लेकिन इसमें बहुत वक्त लगेगा। हर एक छोटी इकाई को इससे जोड़ने के लिए इसे पहले हिंदी में लाना जरूरी है। तभी पूरे देश को डिजिटलाइजेशन से जोड़ने का सपना सच हो सकेगा।

इसी प्रकार बहुत से कारण हैं जिनके लिए हम सभी को एक भाषा से जुड़ना जरूरी है। इन सबसे बढ़कर यह देश की मातृभाषा है उसे सम्मान देना और दिलाना हमारा परम कर्तव्य है। मातृभाषा देश की धरोहर होती है। जिस तरह हम तिरंगे को सम्मान देते हैं वैसे ही हमारी भाषा भी सम्माननीय है। हम खुद जब तक इस बात को स्वीकार नहीं करेंगे तब तक इसे दूसरों तक पहुंचाना मुश्किल है।

हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अमेरिका में जाकर अपनी मातृभाषा हिंदी में भाशण दिया था। यह हमारे लिए एक गर्व की बात है। विदेशी धरती पर अपनी मातृभाषा में पूरे आत्मविश्वास के साथ वही एक मंच की शोभा बढ़ा सकता है जो सच्चा देशभक्त है।

माना हालात प्रतिकूल हैं, रास्तों पर बिछे शूल हैं



करम चन्द, सिपाही/जीडी
161 बटा0, के.रि.पु.बल, श्रीनगर

माना हालात प्रतिकूल हैं, रास्तों पर बिछे शूल हैं,
रिश्तों पे जम गई धूल है।
पर तू खुद अपना अवरोध न बन,
तू उठ..... खुद अपनी राह बना.....।
माना सूरज अँधेरे में खो गया है....,
पर रात अभी हुई नहीं, यह तो प्रभात की बेला है।
तेरे संग है उम्मीदें, किसने कहा तू अकेला है,
तू खुद अपना विहान बन, तू खुद अपना विधान बन...।
सत्य की जीत ही तेरा लक्ष्य हो,
अपने मन का धीरज, तू कभी न खो।

रण छोड़ने वाले होते हैं कायर,
तू तो परमवीर है, तू युद्ध कर– तु युद्ध कर...।
इस युद्ध भूमि पर, तू अपनी विजयगाथा लिख,
जीतकर के ये जंग, तू बन जा वीर अमिट।
तू खुद सर्व समर्थ है, वीरता से जीने का ही कुछ अर्थ है,
तू युद्ध कर – बस युद्ध कर.....।

हिन्द की भाषा हिन्दी



भूप किशोर शर्मा,
द्वितीय कमान अधिकारी
37वीं वाहिनी, के.रि.पु.बल

हिन्दी हमारी राजभाषा है।
गर्व से बोलो ये आज की भाषा है।।

अंग्रेजी को अपनाना आज भी गुलामी है।
देश के लिए खतरा नही सुनामी है।।

हिन्दी के वृद्धि के लिए इनाम देना पड़ता है।
ये कैसी दुर्दशा है कि दाम देना पड़ता है।।

हिन्दी सहज, सार्मथ्य, सटिक सरल है।
सशक्त, सक्षम स्वीकार्य अचल है।।

ये जन–जन को आपस में जोडने की भाषा है।
जात–पात और भेद–भाव को तोड़ने की भाषा है।।

अनिवार्य हो हिन्दी राजकाज की भाषा में।
सख्त हो निर्णय विकास की आशा में।।

विश्व में आज हिन्दी पर जोर है।
राष्ट्र एक, भाषा एक जगह–जगह शोर है।।

यांत्रिक उपकरणों में, हिन्दी पूर्णतः मौजूद है।
अन्य भाषाओं से भारी, इसका वजुद है।।

अंग्रेजी से मापते है ज्ञान का पैमाना।
अज्ञानी समझकर हिन्दी भाषी बनते है निशाना।।

सामाजिक स्तर पर हम हिन्दी बोलने से, अक्सर कतराते है।
अपनी हर बात को आखिर क्यों, अंग्रेजी में समझाते है।।

प्रान्तीय भाषाओं का हिन्दी के संग मेल हो।
सीखना बडा सरल है जैसे, बच्चों का खेल हो।।

एक प्रण, हर क्षण राष्ट्रधर्म निभाना है।
क्षेत्रिय भाषा के साथ–साथ हिन्दी को अपनाना है।।

प्रान्त के संवाद के लिए भाषा अनेक हो।
देश के विकास हेतु राष्ट्रभाषा एक हो।।

राष्ट्र के निर्माण में हिन्दी को अपनाइए।
अखंण्ड भारत को खंडित होने से बचाइए।।

हिन्दी और हम



जितेन्द्र कुमार,
उ.नि./आशु.,
जन संपर्क शाखा

हिन्दी भाषा है महान,

कहते हैं, सब सीना तान ।

पल भर के लिये सोंचे इन्सान,

रख पाते हैं इसका कितना ध्यान ।

सिर्फ 14 सितम्बर को ही करते हैं,

अपनी राष्ट्र भाषा का सम्मान ।

हर पल हर दिन करते हैं हम,

हिन्दी बोलने वालों का अपमान ।

14 सितम्बर को ही क्यों,

याद आता है बस हिन्दी बचाओ अभियान ।

क्यों समझते हैं हिन्दी बोलने में अपमान,

और अंग्रेजी बोलने में खुद को महान ।

भूल गये हम क्यों, इसी अंग्रेजी ने ,

बनाया था हमें वर्षों पहले गुलाम ।

आज उन्हीं की भाषा को को करते हैं

हम शत् शत् प्रणाम ।

अरे ओ भटके हुए इन्सान

अब तो जगाओ अपना सोया हुआ स्वाभिमान ।

आओ मिलकर करें यह प्रयास

दिलायें अपनी मातृभाषा को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान ।

महानिदेशक के दौरे

ग्रुप केन्द्र, आवड़ी, दिनांक 03.07.2017





आर.टी.सी. आवड़ी, दिनांक 03.07.2017





183 बटालियन, पुलवामा, श्रीनगर(जम्मू कश्मीर), दिनांक 09.08.2017





महानिदेशक के दौरे

49 बटालियन, करन नगर, श्रीनगर(जम्मू कश्मीर)
दिनांक 15.08.2017







202 कोबरा बटालियन, कोरापुट(उड़ीसा)
दिनांक 27.08.2017







महानिदेशालय के कार्यक्रम

महानिदेशक द्वारा पुस्तक का विमोचन , दिनांक 03.07.2017



महानिदेशक डिस्क एवं प्रशस्ति पत्र वितरण समारोह, दिनांक 05.07.2017



महानिदेशक डिस्क एवं प्रशस्ति पत्र वितरण समारोह, दिनांक 05.07.2017





पर्वतारोही टीम को महानिदेशालय मे सम्मान, दिनांक 21.07.2017





महानिदेशालय के कार्यक्रम

के.रि.पु.बल के 78वीं वर्षगांठ के अवसर पर महानिदेशक का प्रेस कॉन्फ्रेन्स, दिनांक 26.07.2017





विश्व हेपेटाइटिस दिवस, दिनांक 10.08.2017





सद्भावना दिवस, दिनांक 18.08.2017





विविध कार्यक्रम

ग्रुप केन्द्र, रामपुर का स्थापना दिवस समारोह, दिनांक 01.08.2017





206 कोबरा, करनपुर, जगदलपुर(छत्तीसगढ़) का स्थापना दिवस समारोह, दिनांक 01.08.2017





105 आर.ए.एफ. में स्वच्छता कार्यक्रम





सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल, रोहिणी में वार्षिक प्रदर्शनी एवं पुरस्कार वितरण



12 अगस्त, 2017 को सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल, रोहिणी ने बहुत ही उत्साह के साथ वार्षिक प्रदर्शनी सह पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया। डॉ0 मनु भटनागर, अध्यक्षा, के.रि.पु.बल परिवार कल्याण संघ, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थी। उन्होंने द्वीप प्रज्जवलित कर समारोह का उद्घाटन किया एवं साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। श्रीमती रेखा लोहानी, भा.पु.से. पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशासन) सह प्रबंधक, सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल, रोहिणी भी इस अवसर पर उपस्थित थी।

राष्ट्र के प्रति अपनी भावनाओं को दर्शाते हुए महान गर्व के साथ विद्यालय के गाना बजाने वालों ने ''हम हिन्दुस्तानी हैं '' के गीत बहुत ही मधुरता के साथ गाया। मुख्य अतिथि और अन्य गणमान्य असमिया लोक नृत्य (करबी), जूनियर नृत्य (एक तेरा नाम है सच्चा) और देशभक्ति नृत्य (जय हे) को देखने के लिए मंत्रमुग्ध हो गये। मुख्य अतिथि डॉ0 मनु भटनागर ने अच्छे अंक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को शुभकामनाएं दी और उनके शानदार प्रदर्शन के लिए उन्हें बधाई भी दी। उन्होंने सफलता की सीढ़ी पर पायदान जारी रखने के लिए उन्हें प्रेरित किया। उन्होंने स्कूल को रोबो जीनियस किट प्रदान किया, ताकि छात्रों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में और अधिक समय के साथ तालमेल रखने में प्रोत्साहन मिल सके।

मुख्य अतिथि द्वारा विज्ञान, कम्प्यूटर और गणित विभाग के वार्षिक प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया गया। मुख्य अतिथि और अन्य गणमान्य ''क्रिएटिव माइंड्स'' को देखने के लिए अभिभूत हुए, जहां वर्किंग मॉडल और प्रयोगों के माध्यम से बच्चों ने वैज्ञानिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की, जिन्होंने अपने अविष्कारों के साथ दुनिया को बदल दिया। उन्होंने गणित विभाग द्वारा प्रदर्शित ''संख्याएं हर जगह'' समान रूप से प्रभावशाली पाया। बच्चों को रोजमर्रा की जिंदगी में संख्या दर्शाने के लिए पहेली के माध्यम से, 3डी मॉडल दिखाया गया। सीआरपीएफ के गणमान्यों ने प्री–प्राइमरी, प्राइमरी एंड आर्ट डिपार्टमेंट द्वारा पेश किए गए प्रदर्शनी की भूरी–भूरी प्रशंसा की। सभी अतिथियों ने छात्रों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सराहना की और उन्हें ईमानदार और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहित भी किया। स्कूल के प्रधानाचार्य श्रीमती निधि चौधरी ने छात्रों को उनके प्रयासों और कार्यक्रम की सफलता के लिए उन्हें सराहना की।



महानिदेशक का डिस्क एवं प्रशंसा पत्र

(जुलाई - अगस्त 2017)

क्र.स.	ईरला/बल सं.	पद	नाम	कार्यालय	अभ्युक्ति
1	6956	उप कमाण्डेन्ट	ललित राज कमल	183 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
2	901003495	स.उ.नि./जीडी	फारूक अहमद पठान	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
3	971281375	हवलदार/जीडी	श्रवण पासवान	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
4	971121484	हवलदार/जीडी	रमेश चन्द	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
5	125343365	सिपाही/जीडी	मृणल बासुमातरी	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
6	135120492	सिपाही/जीडी	खोलिया दिनेश	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
7	115063967	सिपाही/जीडी	पवन कुमार	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
8	105035775	सिपाही/जीडी	एल. पौन सुरेश	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
9	913256428	सिपाही/जीडी	धनंजय मिश्रा	180 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
10	031310232	सिपाही/जीडी	राजेन्द्र मीणा	180 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
11	10259	सहायक कमाण्डेन्ट	संतोष कुमार	199 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
12	035260024	हवलदार/आर.ओ.	पवन कुमार	199 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
13	041705569	सिपाही/जीडी	पी.बोरो	199 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
14	045074796	सिपाही/जीडी	राकेश कुमार	199 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
15	–	निरीक्षक	नीलेश पाण्डेय	टी.आई. पी.एस. मिरटूर	कांस्य (परिचालन)
16	10273	सहायक कमाण्डेन्ट	रामाकान्त मल्लिक	201 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
17	055070337	उप निरीक्षक/जीडी	मनोज कुमार	201 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
18	041595062	हवलदार/जीडी	सुनील चौहान	201 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
19	145231696	सिपाही/जीडी	दीप भगत	201 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
20	145103083	सिपाही/जीडी	सूर्यकान्त जैना	201 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
21	145103992	सिपाही/जीडी	विश्वजीत हलदार	201 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
22	9747	सहायक कमाण्डेन्ट	नरपत	204 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
23	090890033	निरीक्षक/जीडी	सोमदेव आर्या	204 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
24	125330128	उप निरीक्षक/जीडी	दीपक कुमार	204 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
25	035225797	हवलदार/जीडी	पप्पू कुमार धांगर	204 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
26	041598597	सिपाही/जीडी	रौशन लाल	204 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
27	095181743	हवलदार/आर.ओ.	ऋषभ शुक्ला	204 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
28	115173058	सिपाही/जीडी	मुकेश सिंह	204 कोबरा बटालियन	रजत (परिचालन)
29	055210859	सिपाही/जीडी	राजेश कुमार	204 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
30	115027383	सिपाही/जीडी	उमेश कुमार सिंह	204 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
31	115330697	सिपाही/जीडी	शमशुल हक	204 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
32	115264205	सिपाही/जीडी	सीताराम	204 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
33	3118	उप महानिरीक्षक	राजेश कुमार यादव	पु.उ.म.नि. उत्तरी कश्मीर, बारामुला	रजत (परिचालन)
34	4037	कमाण्डेण्ट	विनय आनन्द प्रकाश	183 बटालियन	स्वर्ण(परिचालन) 03 स्टार
35	4700	कमाण्डेन्ट	एन.पी. सिंह	182 बटालियन	रजत (परिचालन)
36	4686	उप कमाण्डेन्ट	अजय विभान्शु	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
37	9633	सहायक कमाण्डेन्ट	राज कमल वर्धान	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
38	145340841	उप निरीक्षक/जीडी	अशोक जाखर	183 बटालियन	रजत (परिचालन)
39	115002735	सिपाही/जीडी	प्रेम सिंह गुज्जर	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
40	061840308	सिपाही/जीडी	माजिद मंजूर राथड़	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)

41	115258242	सिपाही/जीडी	गायकवाड़ आशीष	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
42	075222229	सिपाही/जीडी	आर.एस. तोमर	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
43	115002593	सिपाही/जीडी	रमेश पिलानिया	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
44	065108231	सिपाही/जीडी	बिक्की राजभर	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
45	4003	कमाण्डेन्ट	अजय कुमार शर्मा	90 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
46	4033	कमाण्डेन्ट	प्रदीप सिंह गर्ब्याल	96 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
47	5675	द्वि.कमा.अधिकारी	अंगोम नरेश सिंह	90 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
48	135380467	उप निरीक्षक/जीडी	जतिन्द्र कुमार	90 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
49	041547147	सिपाही/जीडी	पवन कुमार	90 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
50	055230495	सिपाही/जीडी	सतविन्द्र पाल	90 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
51	110111492	सिपाही/जीडी	अभय कान्त	90 बटालियन	रजत (परिचालन)
52	991170186	हवलदार/जीडी	बलराज कुमार	40 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
53	095023703	सिपाही/चालक	शीष राम	40 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
54	061840023	सिपाही/जीडी	फारूक अहमद	90 बटालियन	रजत (परिचालन)
55	115234143	सिपाही/जीडी	मोहन कुमार	90 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
56	135232423	सिपाही/जीडी	सचिन पवार	90 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
57	145250397	सिपाही/जीडी	एम. विशाल विक्रम	90 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
58	065073945	सिपाही/जीडी	रंजीत कुमार	96 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
59	085341489	सिपाही/जीडी	मो. इरशान खान	40 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
60	9627	सहायक कमाण्डेन्ट	अनिल कुमार चौरसिया	40 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
61	9753	सहायक कमाण्डेन्ट	दाइहरी नेनियो	24 बटालियन (रेंज क्यू.ए.टी. अनन्तनाग)	स्वर्ण (परिचालन)
62	991441661	हवलदार/जीडी	अनिल कुमार	40 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
63	111692809	सिपाही/जीडी	कौशिक मंडल	40 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
64	085341979	सिपाही/जीडी	नशीर अहमद गनी	40 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
65	135252567	सिपाही/जीडी	लाखन इंग्ले	18 बटालियन (रेंज क्यू.ए.टी. अनन्तनाग)	कांस्य (परिचालन)
66	6247	उप कमाण्डेन्ट	राजपाल सिंह	40 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
67	9596	सहायक कमाण्डेन्ट	तिलक राज	40 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
68	8247	सहायक कमाण्डेन्ट	विवेक कुमार	96 बटालियन	रजत (परिचालन)
69	10901	सहायक कमाण्डेन्ट	एम.एल. नायडु	96 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
70	930921032	हवलदार/जीडी	दिनेश चन्द्रा	18 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
71	055251831	सिपाही/जीडी	पाटिल जगदीश	53 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
72	971360024	हवलदार/जीडी	मनोज	164 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
73	005181253	हवलदार/जीडी	रांकेन्द्र सिंह	90 बटालियन (क्यू.ए.टी. अनन्तनाग)	कांस्य (परिचालन)
74	075070528	सिपाही/जीडी	मोहम्मद योसफ	163 बटालियन (क्यू.ए.टी. अनन्तनाग)	कांस्य (परिचालन)
75	005210778	हवलदार/जीडी	गावण्डे गोपाल ईश्वर	130 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
76	9003	सहायक कमाण्डेन्ट	सुरेश एन.	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
77	031495537	सिपाही/जीडी(आसूचना)	वाई. मेंडिली	08 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
78	850864024	उप निरीक्षक/जीडी	जगदीश चन्द	102 आर.ए.एफ.	कांस्य (परिचालन)
79	067230021	निरीक्षक/जीडी	दीपक शर्मा	104 आर.ए.एफ.	कांस्य (परिचालन)
80	911163708	हवलदार/जीडी	टी. मोहन	105 आर.ए.एफ.	कांस्य (परिचालन)
81	015134551	निरीक्षक/जीडी	मिन्टु कुमार नाथ	184 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
82	6130	उप कमाण्डेन्ट	उमा कान्त	141 बटालियन	कांस्य (परिचालन)

83	800653762	निरीक्षक / जीडी	सुहेल अख्तर	19 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
84	135214158	उप निरीक्षक / जीडी	विश्वजीत सेठी	09 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
85	10282	सहायक कमाण्डेन्ट	अनुपम सिंह	37 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
86	921133999	हवलदार / जीडी	टी. गुन्नैया	37 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
87	6624	उप कमाण्डेन्ट	जीतेन्द्र साहू	201 कोबरा बटालियन	रजत (परिचालन)
88	4447	कमाण्डेन्ट	पुष्पेन्द्र कुमार	204 कोबरा बटालियन	स्वर्ण (परिचालन) 01 स्टार
89	095051493	सिपाही / जीडी	विनायक एन.एस.	204 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
90	065230158	सिपाही / जीडी	संजीव कुमार	207 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
91	115041188	सिपाही / जीडी	रंजन कुमार पानीग्रही	202 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
92	041664455	सिपाही / जीडी	कामरूल इस्लाम लस्कर	147 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
93	7862	सहायक कमाण्डेन्ट	धर्मेन्द्र पाठक	149 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
94	830070576	निरीक्षक / जीडी	एस.के. सारंगी	190 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
95	120610062	उप निरीक्षक / जीडी	जितेन्द्र सिंह	157 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
93	065049993	स.उ.नि. / टी.	दिलीप कुमार राउत	3 बेतार वाहिनी	कांस्य (परिचालन)
97	981280799	हवलदार / जीडी	जय नन्दन रवि	214 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
98	035061646	सिपाही / जीडी	सदानन्द ठाकुर	218 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
99	097350068	निरीक्षक / जीडी	राजेन्द्र कुमार	180 बटालियन	रजत (परिचालन)
100	10049	सहायक कमाण्डेन्ट	प्रशान्त सिंह	116 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
101	065346808	सिपाही / आसूचना	समीर अहमद भट	कश्मीर मुख्यालय	कांस्य (परिचालन)
102	9792	सहायक कमाण्डेन्ट	पाओतीनथांग	176 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
103	085340982	सिपाही / जीडी	मुदासिर अहमद लोन	177 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
104	060049523	सिपाही / आसूचना	रामायण कुमार	153 बटालियन	रजत (परिचालन)
105	060040078	सिपाही / जीडी	रवि कुमार	159 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
106	105343423	उप निरीक्षक / जीडी	रामकेश मीणा	49 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
107	903060227	स0उ0नि0 / जीडी	नरेश कुमार	44 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
108	973360993	हवलदार / जीडी	फियाद अहमद	28 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
109	961231045	हवलदार / जीडी	इन्द्रजीत	28 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
110	110115034	सिपाही / जीडी	हिमांशु कुमार	28 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
111	065227952	सिपाही / जीडी	फगन सिंह धुवे	123 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
112	860887009	उप निरीक्षक / जीडी (महिला)	कमलेश राणा	88 (महिला) बटालियन	कांस्य (परिचालन)
113	105044435	सिपाही / जीडी (महिला)	ममता साहु	135 (महिला) बटालियन	कांस्य (परिचालन)
114	041350245	सिपाही / जीडी (महिला)	वर्षा उइके	213 (महिला) बटालियन	कांस्य (परिचालन)
115	923060686	स0उ0नि0 / जीडी (महिला)	बी. शान्ति पेरूमल	232 (महिला) बटालियन	कांस्य (परिचालन)
116	5191	द्वि0कमा0अधि0	धर्मेन्द्र कुमार झा	रेन्ज हीरानगर	रजत (परिचालन)
117	105345168	सिपाही / चालक	कृष्ण कुमार	137 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
118	041550173	सिपाही / जीडी	पवन कुमार	160 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
119	901002462	स0उ0नि0 / जीडी	जालीम राय	136 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
120	821141545	निरीक्षक / जीडी	बी.सी. नरजरी	156 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
121	6616	उप कमाण्डेन्ट	विनोद कुमार टंडन	पु0उ0म0नि0 परिचालन दंतेवाड़ा	स्वर्ण (परिचालन) 01 स्टार
122	10194	सहायक कमाण्डेन्ट	देवा राम चौधरी	195 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
123	9640	सहायक कमाण्डेन्ट	ऋषि पाल सिंह	212 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
124	991110102	निरीक्षक / जीडी	विरेन्द्र सिंह	229 बटालियन	कांस्य (परिचालन)

125	105034822	सिपाही/जीडी	जी. वेलमुरूगन	219 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
126	061778117	सिपाही/जीडी	शेखर पॉल	150 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
127	5356	द्वि0कमा0अधि0	जय सिंह	71 बटालियन	रजत (परिचालन)
128	105028404	उप निरीक्षक/जीडी	हरिन्द्र डागर	221 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
129	105053131	उप निरीक्षक/जीडी	अकाई सुमी	224 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
130	095071039	निरीक्षक/जीडी	परमजीत सिंह	51 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
131	9409	सहायक कमाण्डेन्ट	सिद्धार्थ कुमार गौतम	26 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
132	830742556	निरीक्षक/जीडी	कैलाश चन्द	143 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
133	4974	द्वि0कमा0अधि0	आर.के. बरूआ	ऑप्स जोरहट	कांस्य (परिचालन)
134	095121749	निरीक्षक/आसूचना	चाबुन्नाबाम राकेश कुमार सिंह	86 बटालियन	रजत (परिचालन)
135	951340296	हवलदार/आसूचना	नाजीर अहमद	82 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
136	085340367	सिपाही/आसूचना	नसीर अहमद गनाइक	03 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
137	041544405	सिपाही/आसूचना	मोचीराम बेहरा	ऑडिसा सेक्टर	कांस्य (परिचालन)
138	041668078	सिपाही/आसूचना	प्रभुनाथ	153 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
139	115176851	सिपाही/आसूचना	सुनील खेस	203 कोबरा बटालियन	कांस्य (परिचालन)
140	135326116	सिपाही/आसूचना	सरफराज खान	223 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
141	810660956	निरीक्षक/जीडी	बिनोद कुमार सिंह	148 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
142	901310699	हवलदार/जीडी	आर.पी. पाण्डेय	148 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
143	8566	सहायक कमाण्डेन्ट	राज कुमार चौधरी	103 आर.ए.एफ.	कांस्य (परिचालन)
144	10765	सहायक कमाण्डेन्ट	संजय कुमार	194 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
145	790400024	उप निरीक्षक/जीडी	केसर देव	83 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
146	045210269	सिपाही/जीडी	राम लाल	ग्रु0के0 पुणे	कांस्य (परिचालन)
147	830753977	निरीक्षक/जीडी	मंजुनाथ जे.	ग्रु0के0 तरालु	कांस्य (परिचालन)
148	901680068	निरीक्षक/मंत्रा0	राकेश सिंह	परिचालन महानिदेशालय	कांस्य (प्रशासन)
149	841121192	निरीक्षक/मंत्रा0	महेश चन्द्र	परिचालन महानिदेशालय	रजत (प्रशासन)
150	005001209	निरीक्षक/जीडी	राकेश कुमार	परिचालन महानिदेशालय	कांस्य (प्रशासन)
151	065280076	स0उ0नि0/मंत्रा0	नरेन्द्र सिंह नेगी	परिचालन महानिदेशालय	कांस्य (प्रशासन)
152	055071976	सिपाही/जीडी	राजेश कुमार	परिचालन महानिदेशालय	स्वर्ण (प्रशा0) 01 स्टार
153	031432106	सिपाही/जीडी	अजेश रघुनाथ	206 कोबरा (संलग्न–परि0महानिदे0)	स्वर्ण (प्रशासन)
154	911181742	हवलदार/जीडी	सुदर्शन राम	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
155	961260303	हवलदार/जीडी	निरंजन सुथर	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
156	105080271	सिपाही/जीडी	सुशील कुमार	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
157	105080262	सिपाही/जीडी	आकाश कुमार	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
158	075262543	हवलदार/आर.ओ.	सोनू कुमार	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
159	031472464	सिपाही/जीडी	मयंक आनन्द	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
160	–	मेजर (रिटायर्ड)	नाजीर हुसैन, वीर सेना मेडल	सेन्ट्रल बैण्ड टीम	कांस्य (प्रशासन)
161	931276427	हवलदार/बैण्ड	रौशन खान	ग्रु0के0, दुर्गापुर	कांस्य (प्रशासन)
162	981220029	सिपाही/बैण्ड	शिहाब पी.पी.	ग्रु0के0, दुर्गापुर	कांस्य (प्रशासन)
163	065131723	सिपाही/बैण्ड	दीपक कुमार राय	ग्रु0के0, दिल्ली	कांस्य (प्रशासन)
164	991190472	सिपाही/बैण्ड	राजेन्द्र सिंह	ग्रु0के0–2 अजमेर	कांस्य (प्रशासन)
165	095230318	सिपाही/बैण्ड	दिनेश कुमार	आर.टी.सी. श्रीनगर	कांस्य (प्रशासन)
166	065021062	सिपाही/बैण्ड	समशेर सिंह	ग्रु0के0, इलाहाबाद	कांस्य (प्रशासन)

167	981320024	सिपाही/बैण्ड	विजय कुमार राय	ग्रु0के0, दुर्गापुर	कांस्य (प्रशासन)
168	105351879	सिपाही/बैण्ड	एन.जे. चकमा	ग्रु0के0, अगरतला	कांस्य (प्रशासन)
169	031240041	सिपाही/बैण्ड	प्राजीन आर.पी. स्टेनली	ग्रु0के0, इलाहाबाद	कांस्य (प्रशासन)
170	145211472	सिपाही/बैण्ड	राहुल कुकाड़कर	ग्रु0के0, नागपुर	कांस्य (प्रशासन)
171	035204992	सिपाही/बैण्ड	प्रदीप कुमार तिवारी	ग्रु0के0, मुजफ्फरपुर	कांस्य (प्रशासन)
172	005121802	सिपाही/बैण्ड	सिकन्दर यादव	आर0टी0सी0 श्रीनगर	कांस्य (प्रशासन)
173	981310549	सिपाही/बैण्ड	रतन सिंह	ग्रु0के0 गांधीनगर	कांस्य (प्रशासन)
174	036210026	सिपाही/बैण्ड	हेमराज	ग्रु0के0 पल्लीपुरम	कांस्य (प्रशासन)
175	991321024	सिपाही/बैण्ड	नवीन कुमार थापा	ग्रु0के0 गांधीनगर	कांस्य (प्रशासन)
176	095230298	सिपाही/बैण्ड	संजीव कुमार	ग्रु0के0 –दो अजमेर	कांस्य (प्रशासन)
177	981190015	सिपाही/बैण्ड	संजीव कुमार	ग्रु0के0 दिल्ली	कांस्य (प्रशासन)
178	045074448	सिपाही/बिगुलर	पवन कुमार	ग्रु0के0 बनतलाब	कांस्य (प्रशासन)
179	065300352	सिपाही/बिगुलर	अशवनी कुमार	176 बटालियन	कांस्य (प्रशासन)
180	055355003	सिपाही/बिगुलर	शिवाशीष मित्रा	189 बटालियन	कांस्य (प्रशासन)
181	055355155	सिपाही/बिगुलर	अभिजीत दास	186 बटालियन	कांस्य (प्रशासन)
182	065108383	सिपाही/बिगुलर	रोहित करमाकर	171 बटालियन	कांस्य (प्रशासन)
183	055070221	सिपाही/बिगुलर	रंजीत सिंह	33 बटालियन	कांस्य (प्रशासन)
184	4700	कमाण्डेन्ट	नरेन्द्र पाल सिंह	182 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
185	5183	द्वितीय कमान अधिकारी	कुमार मयंक	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
186	8859	सहायक कमाण्डेंट	वरूण शर्मा	182 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
187	005220631	हवलदार/जीडी	करण सिंह तौमर	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
188	973364134	हवलदार/जीडी	रियाज़ अहमद सौफी	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
189	015070285	सिपाही/जीडी	चन्द्रा विक्की	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
190	015071317	सिपाही/जीडी	देवेन्द्र सिंह	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
191	041753929	सिपाही/जीडी	उज्जवल भूजाल	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
192	5448	द्वितीय कमान अधिकारी	आनन्द कुमार	183 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
193	145340841	उप निरीक्षक/जीडी	अशोक झाकर	183 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
194	145340823	उप निरीक्षक/जीडी	सुधाकर गुप्ता	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
195	943304357	हवलदार/जीडी	सुरेन्द्र कुमार	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
196	941371074	हवलदार/जीडी	प्रभुनाथ यादव	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
197	065347761	सिपाही/जीडी	मोहिन्द्र पॉल	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
198	115063985	सिपाही/जीडी	राहुल कुमार	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
199	115063967	सिपाही/जीडी	पवन कुमार	183 बटालियन	रजत (परिचालन)
200	4692	कमाण्डेन्ट	राधे श्याम सिंह	176 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
201	9698	सहायक कमाण्डेंट	राम सिंह	176 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
202	9739	सहायक कमाण्डेंट	रवि शर्मा	44 बटालियन	रजत (परिचालन)
203	9666	सहायक कमाण्डेंट	नरेश कुमार	79 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
204	903055439	सहायक उप निरीक्षक/जीडी	प्रताप सिंह	176 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
205	920980125	हवलदार/जीडी	शौकत अली	176 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
206	075341371	सिपाही/जीडी	मौ0 यासीन तैली	115 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
207	115340104	सिपाही/जीडी	राहुल सिंह	82 बटालियन	रजत (परिचालन)
208	045232487	सिपाही/जीडी	बुद्धि सिंह	44 बटालियन	कांस्य (परिचालन)

209	115133092	सिपाही/जीडी	राजीव बोरो	54 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
210	110044636	सिपाही/जीडी	देवसन्त कुमार	82 बटालियन	रजत (परिचालन)
211	065340675	सिपाही/जीडी	कैसर अहमद शेख	43 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
212	061850144	सिपाही/जीडी	अब्दुल रहीम कुमार	164 बटालियन	रजत (परिचालन)
213	085340367	सिपाही/जीडी	नसीर अहमद गनाई	03 बटालियन	रजत (परिचालन)
214	115071621	सिपाही/जीडी	रामजी बक्शी	176 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
215	115071603	सिपाही/जीडी	गौरव शर्मा	176 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
216	115253025	सिपाही/जीडी	लाकन नीमबलकार	176 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
217	135321826	सिपाही/जीडी	पारस दहीयर	176 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
218	035111876	सिपाही/जीडी	मितेन्द्र टोप्पो	176 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
219	5202	द्वितीय कमान अधिकारी	कपिंग गिल	53 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
220	115193398	सिपाही/जीडी	देवोत्तम कुमार	53 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
221	ई.एक्स.के. 872431 सं0 7601	उप निरीक्षक	मौ0 मुर्तजा	एस.ओ.जी. जम्मू–कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
222	4952	द्वितीय कमान अधिकारी	डी.पी. भारद्वाज	72 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
223	075080355	सिपाही/जीडी	सुशील कुमार धामा	72 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
224	4449	कमाण्डेंट	राजेश कुमार	180 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन) 03 स्टार
225	6255	उप कमाण्डेंट	संजय कुमार	180 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
226	9206	सहायक कमाण्डेंट	राजेश कुमार बर्नेला	180 बटालियन	रजत (परिचालन)
227	121800032	उप निरीक्षक/जीडी	रिंकू कुमार गुप्ता	180 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
228	045020997	हवलदार/आर.ओ.	हरि राम यादव	180 बटालियन	रजत (परिचालन)
229	065026261	हवलदार/आर.ओ.	राकेश यादव	180 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
230	015000562	सिपाही/जीडी	मनोहर लाल मीणा	180 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
231	125340311	सिपाही/जीडी	बिपिन कुमार	180 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
232	055163024	सिपाही/जीडी	संदीप सिंह	180 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
233	065111631	सिपाही/जीडी	सतीश	180 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
234	065001177	सिपाही/जीडी	अनील बनीयाला	180 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
235	115204514	सिपाही/जीडी	रंजन कुमार शाह	180 बटालियन	रजत (परिचालन)
236	065342197	सिपाही/जीडी	मुस्ताक अहमद मीर	180 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
237	125340356	सिपाही/जीडी	नजीर अहमद	180 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
238	145310933	सिपाही/जीडी	धनपति बरमान	180 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
239	952259	सहायक उप निरीक्षक	राम सिंह	1 बटालियन, जम्मू–कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
240	ए.आर.पी. 045725	एस.जी. सिपाही	पवन सिंह	1 बटालियन, जम्मू–कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
241	5183	द्वितीय कमान अधिकारी	कुमार मयंक	182 बटालियन	रजत (परिचालन)
242	6830	उप कमाण्डेन्ट	हंस राज मीणा	182 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
243	8859	सहायक कमाण्डेंट	वरूण शर्मा	182 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन) 01 स्टार
244	10772	सहायक कमाण्डेंट	के.के. यादव	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
245	991111001	हवलदार/जीडी	सुनील कुमार	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
246	991350023	हवलदार/जीडी	राकेश कुमार पटेल	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
247	001403323	हवलदार/जीडी	के. गुलाब सिंह	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
248	075220779	सिपाही/जीडी	ललित शुक्ला	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
249	7583	उप कमाण्डेन्ट	एस.एन. तिवारी	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
250	9232	सहायक कमाण्डेंट	अखिलेश यादव	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)

251	145340841	उप निरीक्षक / जीडी	अशोक झाकर	183 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन) 01 स्टार
252	055052116	सिपाही / जीडी	सतीश बी.बी.	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
253	075340989	सिपाही / जीडी	एम.डी. हुसैन	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
254	943304357	हवलदार / जीडी	सुरेन्द्र कुमार शर्मा	183 बटालियन	रजत (परिचालन)
255	901270216	स0उ0नि0 / जीडी	विकास सिंह	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
256	145044978	सिपाही / जीडी	कपिल पाल	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
257	–	वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, पुलवामा	मौ0 असलम	जम्मू–कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
258	–	निरीक्षक, पुलवामा	मसारत अहमद मीर	जम्मू–कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
259	7817	सहायक कमाण्डेंट	अब्दुल रहीम	179 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
260	9032	सहायक कमाण्डेंट	मनीष कुमार	03 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
261	041550752	निरीक्षक / जीडी	सुरेन्द्र कुमार	179 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
262	110725045	सिपाही / जीडी	इन्द्रजीत प्रसाद	179 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
263	911182721	हवलदार / जीडी	एस.एन. यादव	92 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
264	115322935	सिपाही / जीडी	एफ.के. राठौड़	92 बटालियन	रजत (परिचालन)
265	971161281	हवलदार / जीडी	सेनथील कुमार	179 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
266	115322956	सिपाही / जीडी	उपेन्द्र कुमार	98 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
267	943150314	हवलदार / जीडी	चन्द्रिका प्रसाद	177 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
268	125370995	सिपाही / जीडी	विनोद कुमार	177 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
269	5183	द्वितीय कमान अधिकारी	कुमार मयंक	182 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
270	6671	उप कमाण्डेन्ट	कुलदीप सिंह चाहर	182 बटालियन	रजत (परिचालन)
271	8859	सहायक कमाण्डेंट	वरूण शर्मा	182 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन) 02 स्टार
272	65262719	हवलदार / आर.ओ.	धमेन्द्र सिंह	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
273	001392447	हवलदार / जीडी	सर्वेश कुमार	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
274	115112744	सिपाही / जीडी	प्रदीप कुमार	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
275	055073177	सिपाही / जीडी	फामे कुमार	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
276	121550143	सिपाही / जीडी	विष्णु प्रसाद	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
277	135030555	सिपाही / जीडी	ए. संतोष कुमार	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
278	105029749	सिपाही / जीडी	शेर बहादुर	182 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
279	5448	द्वितीय कमान अधिकारी	आनन्द कुमार	183 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन) 01 स्टार
280	9742	सहायक कमाण्डेंट	सिकन्दर यादव	183 बटालियन	रजत (परिचालन)
281	10065	सहायक कमाण्डेंट	राज बरधान	183 बटालियन	रजत (परिचालन)
282	943304357	हवलदार / जीडी	सुरेन्द्र कुमार शर्मा	183 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
283	031435516	सिपाही / जीडी	सतनाम सिंह	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
284	061840371	सिपाही / जीडी	तुफैल हुसैन	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
285	005071378	हवलदार / जीडी	डी. नजीर हुसैन	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
286	075110654	सिपाही / जीडी	नवीन कुमार फोगाट	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
287	135120492	सिपाही / जीडी	दिनेश कोहली	183 बटालियन	रजत (परिचालन)
288	025011798	सिपाही / जीडी	तेजपाल सिंह	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
289	116057	अपर पुलिस अधीक्षक(परि0) पुलवामा	जहीर अब्बास जाफरी	जम्मू–कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
290	901944	अपर पुलिस अधीक्षक (डी.ए.आर.)	देवेन्द्र सिंह	जम्मू–कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)



डॉ0 मनु भटनागर, अध्यक्षा के.रि.पु.बल परिवार कल्याण संघ, के.रि.पु.बल के 78वीं वर्षगांठ परेड के अवसर पर फोटो प्रदर्शनी को देखती हुई



डॉ0 मनु भटनागर, अध्यक्षा के.रि.पु.बल परिवार कल्याण संघ, विश्व हेपेटाइटिस दिवस समारोह के अवसर पर द्वीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करती हुई



श्री हंसराज गंगाराम अहीर, माननीय गृह राज्य मंत्री अलंकरण समारोह के अवसर पर
महानिदेशक के.रि.पु.बल एवं पदक प्राप्तकर्ता अधिकारियों एवं जवानों के साथ